



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

I SSN 2229-547X VI DEHA



विदेह १४६ म अंक १३ जनवरी २०१४ (वर्ष १ मास १३ अंक १४६)

उवल्ल

(बिहनि कथा संग्रह)

कपिलेश्वर बाउत

दू शेरद

प्रसूत कथा संग्रहक बरोदित कथाकाव श्री कपिलेश्वर बाउत छथि, जिनक पहिन कथा-प्रसूत छथि। सामाजिक प्राणी हेरौक कावशे कथाकाव सेहो समाजेक उंगज होग छथि। दूदा समाजेक उन्नति रा अरुणति तँ सब बंग अछि। जग समाजक उंगज कथाकाव छथि ओकव स्पष्ट मनक कथामे अछि।

मिथिलाचनक ऐदिक दर्शन आ मनातनी पद्यतिक बचन-रसन पद्यति बसे-बसे तेना पकडा रिगरीत दिमामे मोडा देल अछि जगमे रिदाह फुष्टर अगिरारि भ२ गेन अछि। जेकव मनक कथामे आरिण गेन अछि।

कथाकावक स्पष्ट रिचाव, कथाक भाया आ रिचय-रसूत कथा सभमे आरिण गेन अछि।

कथाकावक उत्साह अरुणवत रसन बहनि, सएह शुभकामना।

जगदीश प्रसाद माउत

२४ फेब्रुवरी २०१४







## अपंगण रात

हमर पिताजी प्रयक हुना । बायाया, महाभावतसँ रेंसी मिलह बहनि । बहनपव बायाया बाधि हावमोमियमपव स्व-तानमे गरै हुना । हमरूँ पिता ज़ीक रंग नागन गारी । तीण भाँगक बैयावी अछि । आंग.ए. पास केना पछाति री.ए.मे नाँउ लिखोल बनी तनी दिसमे पिताजी गुजयि गेना । रूँठ दादा-दादी, माए रिबरा भ२ गेली । छह मामसँ मान भविक पेमसतव पहिल पत्नी (नम्ही देरी) छह मामक रेंटी नान फ़मावकेँ छोडि चन गेली पछाति दादीक मृत्यु भ२ गेल । खेत-पथावसँ न२ क२ रेंवैर-राँड ी धविक देख-लेख हमरे हुंगव । तहिया भाए सभ छोठै बहनि । परिस्थिति तेना ल मकनोवि देनक जे पञ्जांग छोडए पड़न । मांगक मता रंग बहन ।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डनक लहत्रमे कमहनिषरूँ पार्टीक कार्यकर्ता रेंनि काज कवी । रेंहुत बाम मोकदमासे पार्टीक सदस्य सभकेँ हँसौन गेल । हमरूँ हँसौन गेलौ । पार्टीक पोथी सभ पठ ी । एकठै अथेजी सकुन, निजि रिन्यायक उद्घाटनमे भाग जेलौ । ओतए मैथिलीमे अपंग रकतरय देनिष । सकुनक प्राचार्य रादमे कहनि, अहाँ कोण छी-छा-छथिमे रेंजेलौ । हम कहनिमि मिथिनाक छी मातृजाया मैथिली अछि, मैथिलीमे ले रेंजितौँ तँ कि रिदेशी भाषामे रेंजितौँ ।

श्रुति प्रकाशिसँ प्रकाशित जगदीश प्रसाद मण्डन ज़ीक लिखन पोथी (गामक जिनगी, उतथाण-पतन, मोनागन गाढक फ़ुन, मिथिनाक रेंटी जिनगीक जीत गत्यादि) सभ जखनि पठलौँ तँ हमरो जितना भेन किछु लिखरौक ।

तंग समेमे श्री गजेन्द्र ठाकुर मण्डनजी सँ भेटै कबए रेंवमा एना, हमरो भेटै भेना, गप-सपंग केना । निखेक उतसाह ठाकुरजी जलौनि । वैशराद दग छियनि श्री गजेन्द्र ठाकुर आ जगदीश प्रसाद मण्डन ज़ीकेँ ।

प्रायः तनी दिसँ छोठै-छोठै कथा सभ लिखए नगलौ । मिथिनाक एक मात्र सरहावा मठ “सगव वाति दीप ज्वए” कथा गोयथीमे जाए-अरैए नगलौ । नयूकथा, रिहनि कथा आ करिता रिदेह आ पत्रिका आ रिदेह-सदेह पत्रिकामे प्रकाशित भेना पछाति आरो उतसाह रेंठन ।

वैशराद दग छियनि श्रुति प्रकाशिक श्री नाणेश्वर फ़माव मा आ नीतु फ़मावीकेँ जे पोथी रूपमे हमर नयूकथा सभकेँ प्रकाशित क२ अहाँ सरहक हाथ तक पहुँचेनि । वैशराद दग छियनि श्री उमेशे मण्डनकेँ जे कथा सभकेँ सलैया केननि रंग-रंग श्री गजेन्द्र ठाकुरकेँ रेंव-रेंव वैशराद ।

आ हमर पहिल नयूकथा संग्रह छी । आशा करै छी जे अहाँ सभकेँ पठमे नीक नगत । कथाक दृष्टिकोण समाजक रीच बीत-बेराजक रंग बीत-रुबीतकेँ सेहो देखेरौक चेष्टा केलौँ अछि । पोथी पठएमे नीक आकि अथना नागए, स्वमार देरौक कष्ट कवर ।

अलीक-

कपिलेश्वर बाँउत

ज़ीरिनोपार्जन- प्रथि

संगर्क-

गाम- रेंवमा, भाया- तरुविया

जिना- मधुवनी, प्रथाड- नखलोव

रिहाव-+४१४१०

मोबाँगन-९९३९९९११३१



### एकसुतुकि-

१. रंगि
२. उवल्ल
३. खबखबी
४. लोस
५. क्यारि लोस
६. कौतल आ सयल
७. मुर्दा
८. सतयल
९. तकरबीव
- १० . गल
- ११ . यल्ल दिरस
- १२ . लुख
- १३ . लोथी
- १४ . किसानक पूजा
- १५ . लुथी-लुत
- १६ . कविग्रगक लिपि

## रश्मि

पवशुबामके रिखाह बेला दम मान भ२ गेन छन । पवशुबाम जदूरीब रौरूक एक मात्र नडका । पुत्री दुष्टी हुका लोकनिके मोदी दूदा भ२ गेन छन ओ दुनु अगल सान्ब रसि छेनी । जदूरीब रौरू खुँ धूम-धामसँ पवशुबामके रिखाह कोशिन्या संग केननि । कोशिन्याके पिता धनी-मनी रोकती पठन-लिखन परिवार, समाजमे अगले मान प्रतिष्ठा, कोशिन्या सेहो री.ए. तक पठन-लिखन छन । खुँ दास दहेजक संग रिखाह लेन । योज-मन्त्री संग कोशिन्या आ पवशुबाम बहए नगना । रिखाह बेला दम रबख भ२ गेन दूदा कोशिन्याके एकोठी पुत्र रा पुत्री ले लेननि । डाकठबीओ गनाज केननि, ओमहाटे-गुशीसँ देखोननि । कोरूना-पातीसँ देवानय तक देखेनक दूदा कोला सफलता ले लेननि ।

सान्ब अजनी हूँ कनहनु बहए नगनी । जे रश्मि आँ वृषु भ२ गेन । ओरुब जदूरीब रौरू सेहो दुखी बहए नगना । एतेक सम्पति के लोगत । कोशिन्याके माए-रौरू हूँ दुखी बहए नगना । सब समाज से अगले कृषी-दाखिन गग-सप्पा जहाँ-तहाँ रजे छन । कोशिन्याक मन दुखी हूँ नगन । कि कएन जाए... । एकाएक एकोठी रिचाव मसमे उंगकन । एक बाति आज-धाक जोडा स्यामी पवशुबामसँ कहनक-

“स्यामीजी एकोठी रात पुठौ ?”

पवशुबाम रजना-

“किएक ले पुठर । जे पुठरक अछि से पुठु हमरो-अहाँमे कोला रात छिपेरक छै । निधोकसँ पुठु ।”

कोशिन्या सिंहकेत राजनि-

“आँ हमरा सिया-पुता बहियेँ हएत । किएक ले अनाथानसँ एकोठी रचाकेँ आनि पुत्र रना नी ।”

पवशुबाम-

“अहाँ पागत तँ ले भ२ गेलौ ।”

कोशिन्या-

“ले-ले सएह पुठे छी । एमे कोन हबज छै । हमरा अहाँकेँ पुत्र भ२ जएत सान्ब-सन्बकेँ पौता भ२ जेतनि रश्मिकेँ चनेरक जोगारो भ२ जएत ।”

पवशुबाम तमागत राजन-

“अहाँ पागत छेलौ । हम एमे किछु ले राजर । लोक की कहत ?”

कोशिन्या हिनतसँ काज केननि । रिहास तले सन्ब जदूरीब रौरू नग जा पुठनखिन-

“रौरूजी एकोठी रिचाव नगले एलौ हेल । की आदेशे दग छी ।”

जदूरीब रौरू-

“पुठह ले की कहे छै छहक ।”

कोशिन्या-

“रौरूजी हमरा कोगथसँ आँ सिया-पुता ले हएत तँ किएक ले अनाथानसँ एकोठी रचाकेँ आनि पौगस पुत्र रना नी ।”



जदूरीव रौरू आगि रौरूना होगत रंजना-

“चूप बद्धु ग्री की रंजे जे । पागन तँ ले भं गेलौ । केतए हमर खणदण आ केतए अनाथानय । अनाथानयमे केकव जन्मन कोन रंटा हएत तेकवा अहाँ गौद जेर । डोमक हएत आकि चमावक, दूसहवक हएत आकि दूसगणक, अरौध समरंषक हएत आकि कथा हमावीक । हमरो अहाँ पागन रंशा देर । ग्री रिटाव हम ले देर ।”

कौशिन्या-

“रौरूजी रंशि चनेरौक तँ जकवी छै । कोन सबन-गनन रिटावमे अहाँ दूमन छी घुबन रौरूकेँ ले देखे छियनि तीन-तीनठौ रंष्टी, रंष्टे केहन तँ खनीया मन-मन । तीनु रंष्टीकेँ घुबन रौरू पठा-लिखा कमागने रौरूव भेज देनथिन । तेकव हणन भेननि जे रूठ केँ तीनुमे सँ कियो देख-भान करैरना ले । तैया कवथिन देख-भान, रौरू माएकेँ छेष्टकाक रिटाव तँ तैया मोटेत जे ममिना आ छेष्टका कवत । तीनु अपन-अपन घबरानी संग पवदेशेमे बहे छथि । घुबनरौरूकेँ दूखी छथि आकि दूखी छथि, धैषमन । धैष कही गहनका लाकव रिजेतिया दूमाधकेँ जे घुबनरौरूकेँ ब्रह्मा आश्रिया ले जाए देनकनि आ सेरो छहन कं बहन छन्हि । एहले तँ कमरो रौरूकेँ छन्हि दूष्टी रंष्टी आ दूनु अमेरिका आ ब्रह्ममे बहे छथि कहांदनि ओत दूनु रिखाहो कं जेननि । केतेक उदाहवा देर अपन पुत्र तँ हणव्रे ले भं गेलनि ।”

जदूरीव रौरू दूनु आँधि उंगव करैत किछ मोटेत रंजना-

“की कहि बहन छी ।”

“कहलौ तँ गीके ।”

कौशिन्या-

“रौरूजी, अपन रंष्टी तँ छेननि किएक रूठ ङीमे जोडा देनकनि । तँ कहर जे अनाथअनाथमे केकरो रंटा होग तगसँ की, आथिव रंटा तँ छिं ले । हमरा आ स्याकेँ पुत्र भं जाएत । अहाँकेँ पोता भं जाएत, एकठौ रंटाकेँ पागन-पोषण भं जेते रंशिक पवसवा कथं भं जाएत । हमरा माए-रौरूकेँ शाति भं जाएत ।”

जदूरीव रौरू-

“बन्धु छी कौशिन्या । आग अहाँ हमर आँधि खोजि देलौ । जाँउ आ स्रुद्धसँ अनाथानयसँ रंटा नं आबु ।”

कौशिन्या

“रौरू ओग रंटाकेँ श्रेशा हगाव जकाँ पठा-लिखा कं रंशाएर सएह ले माए-रौरूक कवतर होग छै ।”

जदूरीव रौरू-

“आर अरिह ले कइ । हमर अमिबराद हमेशा अहाँक संग बहत । गीके कहन गोन छै “पुत्र-हणव्रे तँ किए धन संचय पुत्र-सणव्रे तँ किए धन संचय ।”॥॥





## उत्तर

जराणा तेना ल रँदनि गेन हेल जे । जे काहि तक एक कपेखा जेन जमीन्दारसँ रा कोला मानिक नग दँतधिसड़ ी कबेत बँह छन, ओ आग सत छान-पगहा तोड़ा क२ दिनी, पँजावँ, कनकता, रँयुग छनि गेन आ लाकवी-टाकवी कबए नगन । ओकव बहल-सहल रँत-रिटाव कगड़ १-नतासँ न२ क२ कपेखा तकमे, ओकव सँकारो रँदनि गेन । जेकव रँप कहियो खुनक झूह लै देखनके तैकव रँथै अगणा मिया-प्रताके कनतेष्ट खुनमे पठ । बहन अछि ।

शैकव छोट-झीन गिबहुन्त । परिवारमे सतबह गोठे सदम । भिगसब जाए हव जोतेजे मे एक छेठ रँजे दिसमे आरँ । कहियो मकखा रँखा खसोलाग तँ कहियो गोपनि, कहियो धाक रँखा तँ कहियो धनगोपनी । सत दिस काज कबेत देहक हाव जागि गेन । शैकवकेँ पाँछी मिया-प्रता, तीगठी नडका, दूठी नडकी । रँथैकेँ षाँठ छन, त्रानचन्द्र, धनिचन्द्र, वामचन्द्र । आ रँथैकेँ षाँठ छन चन्द्रकना आ सुम्पारती, रँथै तँ सान्ख रँसँ छेने । रँथै सतमे त्रानचन्द्रकेँ दूठी नडका, धनिचन्द्रकेँ दूठी नडकी आ वामचन्द्रकेँ एकठी नडकी, शैकवक पगी रँसुण हविदया मिया-प्रताकेँ ठहल-ठकोड़ १मे रँसु । रोटाव शैकव रँथ १३ ी तक खेतए काजमे मल नहोले छेले । रँम-दहिन किन्तरो लै देखे छन । रँथै सत मंग पुँरि दग छेले परिवार बमहव बहल तंग बँह छन । कखला बूष-तेन, तँ कखला चाँव-दादि, कखला तीमल-तबकारीमे तँ कखला कगड़ १-नता जेन मल अघोब-अघोब बँह छेले । कोला मेना-ठेनामे मिया-प्रताकेँ केकरो दु कपेखा, केकरो दस कपेखा, केकरो रँस कपेखा देखेले दग छन । जमीला बहल कि हेते कहियो दाही कहियो रौदी, कोला तीग महिगारना हमिन, कोला छह महिगारना हमिन, नकदी आमदनीरँना मिबिह दूठी गाँ आ एकठी महिस छेले, दुपे रँटि क२ ठाका-पैसासँ काज चनरेँ छन । पाँच रँया जमील बहल की हएत तंगहानी रँठ ते जाग छेले ।

परिवारक स्थित देखि क२ त्रानचन्द्र आ धनिचन्द्र, रँयुग छनि गेन । पहिल तँ दु-टावि दिस घुमिते-हिवते बहन, तैकव रँद जा क२ त्रानचन्द्रकेँ एकठी मेठ नग अगणा-घबक काज भेले । धनिचन्द्रकेँ एकठी रँसक खनासीमे लाकवी भेठेले । गमाणदारीसँ दनु भाए काज कबए नगन । मेठकेँ पुतकवा लै त्रानचन्द्रकेँ खुर माले । मेठकेँ एकठी रँथै छेले मेहो सान्ख रँसँ छेले । आरँ त्रानचन्द्र टुनली-टोकासँ डुपव उँठ, मेठक कारोरावकेँ देखए नगन मेठो सत सप्ततिकेँ मानिक त्रानचन्द्रकेँ रँषा देनक । जे करै सप्ततिकेँ । एहए धनिचन्द्र खनासीसँ ड्रागरव रँनि गेन, तैकव रँद अगण मोठव लोलेज पोड़के जमील कीनि क२ चनारँए नागन । खुर कपेखा कमाए दनु भाँग । घब पवहक स्थित रँदनि गेन । टावि-पाँच रँथक रँद त्रानचन्द्र घब एरँक जोगाव केननि । मेठसँ जा क२ कहलखि-

“मेठजी टावि दिस हमा घब जाएरँ आ पवह दिस घबपव बहरँ आ मोनहमा दिस गाड़ी १ पकड़ा हए आगस आरँ जाएरँ ।”

मेठ तँ पोड़के काज नकुव-नुकुव केनक हएव जागक आदेशे द२ देनके ।

मेठ अगणा दिससँ सत सगांजे पटिस हजाव कपेखा, कगड़ १-नता, पाँच किजो मिठांग, मिया-प्रताले सँ-पेष्ट, त्रानचन्द्रक घबराणीले मोलाक मगनसुत आ मोलक पागल देनके । रँडका एठेटीमे भवि एठेटी सत सगांज न२ क२ त्रानचन्द्र घब रिदा भेन । तीग दिसक रँद घब आँएन । पहिल तँ गायक लोक जे देखे त्रानचन्द्रकेँ आश्चर्यो नहो । किबक तँ थैसुसँ आँएन छन । देहो दमी रँदनन । तद्दमे आँथिमे चया नहोले । घब अरँते माँ-रँपकेँ गोव नगननि । माँकेँ गोव नगिते माँक आँथिसँ साँनक रँष जकाँ लाव खसए नगन । त्रानचन्द्रक घबराणीकेँ पएव तँ धवतीपव पड़ ते लै छेले । छँ-पँ थाँषा तैयाव भेन । त्रानचन्द्रा कनपव जा न्ना सारँसँ केननि । तोजल भात खेना पछाति सगां रँरँ आ माँ नग पसारि देनकनि । तीनु दियादनीकेँ कगड़ १-नता, मिया-प्रताक अनग कगड़ १-नता, माँजे साड़ १-साजा-रँजो, दु-दु मेठ । रँरँजे कुर्तिक कगड़ १, जेव भवि गोती, एकठी चदवि, एकठी गमछा, पएवले जूता । सरँहक जेन जे जे सगांज छन सतकेँ द२ देनक



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बाँदमे मिठागरैना पैकिष्ठ सभ निकालि-निकालि सरहक हाथमे देनके । मिया-पुता सभ अंगनामे दरका कपड । पहिनि थिलोना नऽ कऽ थेलथ नगन । बाँदमे माए-बाँरुकेँ नगमे रँजा कऽ पचास हजारक एकठा गङ्गी कपेखाक देनक । बाँप तँ एते कपेखा कहियो देखल ले, से अचम्भा नागि गेननि, रँजना-

“तोही बाखऽ ल जेना कलेक रिटाव हएत तेना कवर ।”

“ले बाँरु अही बाखु ।”

माएकेँ हाथमे पाँच हजारक गङ्गी देनकेँ सभ दियादलीओ केँ दु हजार देनकेँ । सरहक मस गद-गद । एक दिन दुनु बाँपुत वामाचन्द्र घुब नग आगि तपेत बहए । तखल त्रानचन्द्र बाँरुकेँ कहनक-

“बाँरुजी, जखनि हम सभ मिया-पुता बही तखनि हमरा सभकेँ केतेक पाग दीए मेना देखेले ।”

बाँपकेँ पछिना गवरीरी जिनगीक मोन पडि गेलै । आ जेना बुमना गेलै जे कियो हथोवीसँ कपाडगव टोष्ट मवनक लेन । चुपे बहन किडु ले बाँजन । थोडके कान चुप बहना पछाति बाँजन-

“रौखा कहनक तँ ठीके दूदा रीना मोचल-रिटावल रँजनक लेन । बुमि पडि ए जेना तोवा धनक दारी भऽ गेनऽ लेन । सुनह एकठा हम अणन घुठन घुठना कहे छिअ, जखनि हम दम-पनबह रँथक बही तँ हमरा डाँबमे एकठा भुवली पाग छन ओकरा डोवाडेरिमे गाँथि कऽ पहिबिल बही । बरि दिन बहे रीना माए-बाँरुकेँ कहल हडि-चन्द्रमर बाँरुकेँ दर्शन कबेले छनि गेलौ । किएक तँ दारी छन, डाँबमे एकठा पाग अछि । जखनि माए-बाँरुकेँ पता नगननि जे छोड । हडि मेना देखए गेन लेन तखनि अणन गामक एक गोष्टे दिया माए थोडके चुड । आ दूठी कनकतिया आम पठा देननि । तारेँ हम पाँगेकेँ मुवली-कटोवी आ नाग कीनि लल बही । हमरा जखनि रौखा देखननि तँ रिगवरौ केननि आ मेठवी हाथमे दैत रँजना, अ माए पठा देनकेँ लेन । हम चुड । आ आम थेलौ आ नाग मुवली कटवी घबपव लल एलौ । कहेक मतनरँ समेकेँ हिमरँस ल लोककेँ बहन-महन रँदले छै । जेतकेँ ठाँग बहत तेतनीठा ल रिडाला छली । सुनह हमर जे दानी छेनथि ओ कहे छेली रौखा हम जखनि केकरो खेतमे कमागले जागत बही तँ गिवहत एगो ठुवि पाग दग छन रौगमे । से रौखा आग जखनि दु रीया जमीन आ दु सेव अणन घबमे अछि तँ हमी पाँच कियो अणज आकि एक मए कपेखा दग छिए रौगमे । आरँ तोही कहऽ तोवा लोकनिकेँ कम लेना दग छेलियऽ । जहिया दु ठाँका दग छेलियऽ तहिया दुओ ठाँकाक महत छेले महगाग रँडल रहए दु ठाँका अखनि सौ कपेखा भऽ गेन लेन ।”

त्रानचन्द्रकेँ रँजनामन पछतारा होग । रोटावाकेँ ठकडुडी नगि गेन । अ की रँजा गेन दूहस ।

ठकडुडी नगन रँजाकेँ आँथि पोछेत बाँप बाँजन-

“एहेन उमल हए ले दिहऽ कहियो ।”

खबखबी

उना तँ मृतु छुठ्ठा होगत अछि । गृह्य, रर्या, शिवद, हेमन्त, शिशिव आ रसन्त । द्ददा रौरहावमे लोक तीणठोकेँ माले छै गवनी, रर्या आ जाड । सभ मृतुकेँ अणन अनग-अनग गुण अरगुण होगत छै । द्ददा जाडकेँ एकठा अणन अनगे गुण अरगुण अछि । कोण भगराण जाडकेँ जन्म देननि से ले कहि । अ ण मृतुमे तँ लोक हर्य-रियम, वंग-वत्स आ रर्याक फुहावक आणन्द न२ क२ रिँत दग छै । द्ददा जाड तँ कोठकेँ कँगा दग छै । गबीर जेन माकथ आ धनिकक रामते विनासक मृतु रँनि जागए ।

घृष्टव एक दिन एहल समेमे सुरेशेरौरुँ खेत जे मखण केल छन पठरौले गेन । समए छेले माघ मासक शुक्रवातक । जहिला २०२३मे शीतनहरी छेले तहिला अछु रँव भेले । पछिया रँहित जाड सुसकारी दैत बहए । सुकजो भगराण केतए वृका बहना तेकव ठेकाण ले । फुहेस नागन बहए । पानिक रूण जकाँ रर्य महरीत बहए । लोक हरिदम घुले नग आगि तपेत बह छन । ठुँववन घाम-पात खेनासँ मान-जानकेँ पीठ पाँजव रँस गेले । आ रिसारो पडए नगन । तल्लुक टिड-टुल्लुकी सभ जहँपठौर मरए नगन । साँप सभ कोला रीनमे तँ कोला आडक कातमे मुगन पडन । जीनाग लोककेँ कठीण भ२ गेले । एक पशवहिसासँ जे शीतनहरी छन से नदले बहि गेन ।

एहल समेमे घृष्टव मखण गहूम केल छन । तेकवा पठरौले रौरिगरना जेखन मगे रिदा भेन । रौरिगमे जखनि पम्पमेसँ पानि धवारँ नगन पानि ध२ जेनके । पनामठक पाँगपसँ पानि न२ जेनाग छेले से जहाँ कि पाँगप पम्पमेसँ धवारँ नगन आगि पानि दोसर दिनामे फुटुका मावनके आगि घृष्टव आ जेखन दू गोठाकेँ तीजा देनके । तथागि कोला तबहँ पाँगपकेँ रानहि जेनक । जाड दू गोठे खबख कँगए नगन । घृष्टव खेत जा एक किखाबीमे पानि खेनि देनके । आ आगिक जेगावमे घृष्टव रँगनमे कनमराग छेले ओतए नाव वाखन छेले जेगमेसँ एक पाँज नाव खबखवागते अणनक । आरँ जखल सनागसँ आगि धवारँ नगन आगि तेहेण जाड होगत बह जे सनागक काठी खडिजे ल होगत होग । खबखसँ सनागक काठी द्ददा जागत । जँ कठीमे आगि धले तँ नावमे धवरँकान मिमा जाग । खएव, कोला तबहँ आगि धरौनक आगि धधका दू गोठे आगि तापए नगन । पोडके कान पछाति होशि भेले ।

सुरेशेरौरुँ खेत देखेजे रिदा भेना । पएव नग तक केठ देल, पएवमे मोजा-जूता नगोल, जधमे ट्राँजव देल काणमे मोहनव नगोल तैपव सँ माथमे ठैपी देल आँखिओमे चमिया छेननि । तैयो जाड खबखवागत छन । जखनि रौरिग नग एना तँ देखनथि जे दू गोठे आगि तापि बहन अछि । सुरेशेरौरुँ हाथ महक दस्ताना निकारि न आगि तापए नगन । आ रँजना-

“घृष्टवा केहेण समए भ२ गेले जे केतला कपड । देहमे देल छिँ तैयो जाड जेना जागते ल अछि । तँ सभ केना क२ बह जीनी ।”

घृष्टव रँजना-

“गाँ मानिक, गबीरक जिनगी कोला जिनगी छिँ । एक तँ दैरिक मावन जी, दोसर सबकारोक रौरमथा तेहेण ल छै जे की कहँ । कमाए नगोठीरना आ थाए धोतीरना । देहमे देखे छिँ जेतल कपड । अछि तगसँ वातिक जाडमे गुजव करै जी । घबरानी पवसोती भेन अछि । एकठे बहक घब अछि । दोसर रँकवी आ गाएले अछि । तगमे एक केणमे जावनि-काठी बथे जी । सेहो रँकवीरना घबक ठाँठ ठुँवन अछि ।”

सुरेशेरौरुँ रँजना-



“तरै तै रैव दिक्कत लोगत हेतौ ? ”

घुँठव-

“सौ मालिक, की कहौ । खैव जाए दियो । हमवा सतजे तै एकठौ हुँगारैना छथि । दूदा हे एकठौ रात कहे छी जे केतला अहाँ सत कपाड । नगाएँ, रिजनीक गवमीमे बहरँ दूदा तीसरेँ अहाँ सतकेँ जाड पढावरेँ कवत । ”

सुवेशीरौरू अकचकागत पढना-

“केना लौ । ”

घुँठव-

“ले रूने छिँ, नगाँ, खाँ आ माड । हिले कानमे । ”

सुवेशीरौरू-

“गौके कहे छै । ”

घुँठव-

“मालिक, हमवा सतकेँ कोष अछि । खुरै मोठगव क२ नाव रीछा दग छिँ तैपव सँ फुजो रीछा दग छिँ आ चदव ओठि नग छी आ तथला जँ जाड होए तै मछासँ रैलनहा पष्टिया-गोषवि ओठि नग छी । रैगनमे गोषहनी आ खडडन-मडजाकेँ ओरिया क२ बखल बहे छी ले भेन तै ओकरो पज्जवि दग छिँ । भवि वाति सुनलौत बहन घव गवमाएन बहन । अहाँकेँ तै रूमले हएत जे लौरैसक आगि केहेन लोग छै । गौसँ सुते छी । ”

सुवेशीरौरू-

“तहन तै एखव-कण्डीमिण रैना क२ घवमे बहे छै । रैड नीक अहिना जाडसँ रैटेक कोशिनि कविहै । ले तै सता डाकूव जकाँ हेता, रेचवा कारिथिण पैखानासँ अ एन, कनगव फकड कविते बहए आकि ठठ । मारि देनके । ठंगि-ठूंगि क२ डाकूव नग न२ गेलौ । तैए कहनियो जे जाडसँ रैटि क२ बहिहै । रैकवी आ गाएकेँ सेहो मोली ओठ । क२ बधिहै । ”

दूड । डोनरैत घुँठव रौजम-

“गौके कहे छी मालिक । ”

सुवेशीरौरू-

“रौ घुँठव, दियो-पुतोकै हाँष्टि-दरौाँ व दिहनि जे ठठ । सँ रैटि क२ बहतौ । ”

घुँठव-

“से डौड । मालिके ले अछि । खन गुनली डण्ठी, खन फिकेठ तै खन करँडु खेनागत बहे । की कवरै । हम तै कहरै ले कवरै मालिक । ”

सुवेशीरौरू-

“सएह हम कहरौ ले । ”

घुँठव-



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“हम तँ भवि दिन काज-धन्धामे नागन बहलौ । अही सरहक रँसरिछीमे रौंसक उगद उंखावि टाव-फाव क२ नग छी । जगसँ देहमे घाम फेकैत बहैए । आ वाति क२ लौलेसरौना आगि गवमेल बहैए ।”

सुरेशेरौरु-

“ठीक करै छै । जान छौ तँ जहान छौ । शिवर ले तँ किछ ले । अछ्छा एकछा कह जे योगासन करै छै आकि ले ?”

घुंठब-

“स्यौ मालिक, हम मुर्थ आदमी की जानए गेलिख योगासन आकि पवनियास । हमवा सभजे देहे धुनर योगासन आ पवनियास होग छै । खंशीए सँ ले देह दुहागत बहैए ।”

सुरेशेरौरु रँजना-

“अहो रात ठीके छै ।”

घुंठब-

“मालिक अगहनमे मारि-धुगन क२ कमेलौ, खुर धान कछलौ जगसँ घबमे एक कोठी धाला अछि आ थोड़के चाँडरो अछि । खेतसँ खेसावी साग, रँथुआ साग, सेबसो साग, तोरी साग सरहक तीसल क२ नग छी । कहियो कान अन्न, कोरी, भँठी, मूले सेहो सरहक तीसल आ नग छी आ रँम-रँम करैत बहै छी ।”

सुरेशेरौरु-

“तहन तँ नीके रसत सभ खाग छै ।”

घुंठब-

“अहाँ सभ जकाँ की अाडा, मोस-तोस आकि दुध-दही हमवा सभकेँ भेटै छै । हमवा सरहक देह तँ रँशोख-जेठक बौद, बादरक रयाँ आ माघ मासक जाडसँ ठाकोएन-ठठाएन अछि । अहाँ सभ जकाँ की गागद पवहक रौंस जकाँ मोठगव ले ले अछि जे तागत किछ ले । कहला तीवगव काज देखा दिख क२ देर । हँ अहाँ सभ जकाँ पोथी-पतरा ले ले पछल छी । थमाद खेत देखल अरै छी ।”

कहि खेत आरि दोसव किखावीमे पाणि थोनि हव घुब तव चलि आएन आ गप-सगप करैत रँजना-

“स्यौ मालिक, अहाँ सभ जकाँ की हमवा सभ रीया खेत अछि । न२ द२ क२ अण दस कछी खेत अछि । कनीमे तवकावी-हाडकावी, कनीमे दनिहन-तेनहन, कनीमे साग-पात केल छी । धान-गहुम तँ अही सरहक खेतमे मसखग क२ के गजब करै छी ।”

सुरेशेरौरु-

“एकछा कहारत छै जे नड १-८ड १ धन पागए रँठै देगा कोन । हे रँड जाड होग छै जन्दी खेत पछी जे आ घबगव जो । हमसँ आर अरि क घुम-हिण्ड ले कवर घरेगव जाग छी ।”

घुंठब कहनक-



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“जै गण-सगण करे जी तै एकठा गण ठोरो सुनि निख । हम तै पंजार-भदोली आकि दिन्नी-  
रैमरंग ले ल कमागले गेलौ । देखे छिं जे ठरौहि नागन लोक दोसब द्रुवक जागत  
अछि । तै ओतसँ पाग तै अलैए द्रुदा परिवारसँ लठन बहैए । जरकि सबकारो खेतीपब विशेष  
बियास देनके लेन । खेत अफब-जात पाउन अछि केनिहारक चलेत । कम उगजा भेल तंगी  
तै रठरौ कवत गाममे माए-राप से हकन काले छै । मा निक अही अणन दमा देखिओ ल,  
एते खेत अछि आ बिया-पुता सब रिदेशमे लोकबी करैए । मानकिस रूठमे कला क२ भाषन  
भात करैत हेती से रएह जलैत हेती ।”

सुरेशेरौरु रँजना-

“से तै ठीके कहैत छै । कखला क२ हमरो मनमे होगत अछि जे कथिले एते कमेरौ आ  
एते जमा केरौ । अछ्छा छोव ग सभ रौत । हम जाग छियौ ।”

कहि सुरेशेरौरु घब दिस रिदा भेना । आ घूठव अंतिम किआबीमे पाणि कष्टे नगन । μμ

## भोग

सोशागकेँ मात रीघा खेत छेननि, एकठा नडका बामदेर आ एकठा नडकी सुदामा । सोशाग तँ पठन-लिखन ले दूदा गिवहन्तीमे पारंगत हुना । रैथी बामदेर आगसँ टाजिस रँवख पूर्ब चिडिन पास केल छन । बामदेरक पशु-केशी गिवहन्तीक रैथी तँ रँड कमासुत । सोशागक पशु घुवणी सेहो तेहल कमासुत । दूनु रांपुत तेहेन ले खेती कब जे गाममे टर्काकेँ रियस रँवख बहए । खेतीए रँवख सोशाग अस्सी हज्जाव ष्ठी आनि घब रँवखक । एम्हब बामदेरकेँ तीणठा पुत्र आ एकठा नडकी कौशिन्या छेननि । तीनु नडकाक शाँठ छेननि कवण फमाव, झुगे फमाव, रिपिन फमाव । तीनु नडकामे बामदेरकेँ रँड जेव छेननि हमरो मिया-पुता पठि - लिख लोकरवी टाकवी कवत दूदा प्रपन्नतक डाँग तेहेन ले पठने जे जराणीमे कवीर सैतीस रँवखक उमेवमे नकरा रिमावीसँ मरि गेना । आर तँ पुवा परिवारब हतोत्साह भइ गेल । जहिना कोना गाछ रिहार्डि मे जडि सँ उखरि कइ खसि पारैए आ डारि पात छिन्न-भिन्न भइ जाग छै, तहिना छेननि बामदेरक मिया-पुता सब छेननि पशवह रँवखक, रावह रँवखक, दम रँवखक आ नडकीक उमेव मात्र पाँट रँवख । पिता सोशागक उमेव नगभग माँ ठ रँवख छेननि, माए घुवणीकेँ रवसातक सभेमे एकठा डेन धुँष्ट गेल छेननि कि एक तँ पिछुडि कइ खसि पड़न छेली ।

खेव ! मिया-पुताकेँ पठन-लिखनक कमजोब पडि गेलनि । एक तबफ परिवारक भाव दोसर तबफ रँव-रिबंगक रिमावीमे तीण-तीणठा रूठ-रूठ लूस घबमे । गामक लोक रँव-रिबंगक उँडरै रौ उँडरैत । तैपब पडि सी एकठा केसमे उँनमा देनकनि । कवणक हानति ले पडु । एक मानक रौद दादी घुवणी सेहो मरि गेलनि । कवणक रिखाह जेना मात्र छह रँवख भेल छेली एकठा नडका भेल छन । छह महिना पछाति कवणक स्त्री सेहो मरि गेल । दु मानक रौद कवणक माए सेहो मरि गेल जेना परिवारबमे मरिणक ठराहि नागि गेल । एतेक शोग-सतागक रीट सोशागक हानति जे भेल होशहि भगराल जलैत । तेहेन हानतिमे एक दिन सोशागकेँ प्छेनड १ रिमावी भइ गेलनि । कोना दरौग असब ले करैत बहनि । हानति दिला-दिन रिगडए नगननि । एक तँ परिवारक शोग, दोसर रिमावी ! मरणासनक स्थितिमे नइ अणनकनि । एम्हब कवण रँवमावपुत्रबे प्रोकरेठे दूशीक काज करै छन । काज केना पछाति जखनि घब आरंभ नलैत तँ रौरी जेल टावि-पाँट पीस बसगुला लेल अरैत बहए । रौरीकेँ डाती जूड । जखनि रैथी तँ मरि गेल पोता तँ रैथे जकाँ सेरा-ठहन कइ बहन अछि । दूदा सुखेनहा गाँठमे केतला पाणि आकि खाद दियो ओ की हविखब हएत । सएह स्थिति सोशागकेँ भइ गेल छन । कवो-कहूम सब आरि-आरि जिगेसा-रौत कइ जागत जे रूठ । आर ले खेपत । जिगेसे करैक थियानसँ एक दिन ममिना पोता जूगे फमावक सप्तर घणशाम रौरी रँवमावपुत्रबसँ एक किलो पचमेव मिठाय नइ कइ रूठ ।केँ मल जमाएक दादाकेँ देखेले एना । रूठ । तँ अणल रँवहेशि भेल पड़न छन । घणशाम रौरी अरिंते दादाकेँ गोड नगननि । सोशाग कहलैत रँवना-

“के छी यो ? ”

घणशाम रौरी उँतब देनखिन-

“हम छी घणशाम । ”

“निके बद्ध मिया-पुता सब निके-ना अछि ले ? ”

“है सब ठीके-ठाक अछि । ”

घणशाम रौरी कणी ककि कइ कहनखिन-

“अहाँले थोडक मिठाय अणल छी कणी था नियो । ”





सोनाग उतव देनथिन-

“यो लोखा, आरं चित ले माले। कोला रसतुकेँ थोक गडा ले करे अछि। आरं भगराणकेँ कहियन् जे उठा जेत। किएक तँ रौं कश्चु होगत अछि। मिया-पुत्रोकेँ केतेक भाव देरै ?”

घनश्याम राँरु-

“मवनाग-जिनाग कोला अगना हाथमे छै जे जखनि चारुँ तखनि मवि जाएर। से तँ ले हएत।”

सोनाग-

“हँ से तँ ठीके।”

घनश्याम राँरु-

“अ मिठाग कशी था निअ। अ बसगुना छि।”

सोनाग उतव देनथिन-

“यो लोखा, कवा समारपुव जाग छन तँ सब दिन थोड-थोड बसगुना लेल अरै छन रहुत थेलो-पीलो। आरं की थएरै मोष ले मालेत अछि किछु खाग-पीरैक, द२ दियो अगनामे। मिया-पुत्रा सब था जेत।”

घनश्याम राँरु-

“ले राँरु, से ले हएत। किछु तँ खागए गइत हमरो आलैक साफल भ२ जाएत।”

सोनाग तामसे रीथ भ२ गेना। कहनथिन-

“अहाँ महा रूँचि कहुँम डी। कहे डी तँ रूमते ले छिए।”

केतएँ जेमी एनमि से ले कहि। जेना डिरीया रूँतए नलौत अछि तँ तक द२ मारै छै आ थुर जेव सँ गजोत होगत अछि तहिना उठि क२ रैस गेना आ घनश्यामक हाथ सँ मिठागक डिवा मगष्टि जेनथिन। किछु मिठाग अगन-रंगनमे खसन। जेवसँ रौंजए नगना-

“यो मिया-पुत्रा, केतए गेलै ? आ, ले मिठाग थो।”

घनश्याम राँरु तँ लौक भ२ गेना। सोनाग रँजना-

“जखनि खागरना छेलौ तँ कहियो भेन जे किछु न२ जा क२ राँरुकेँ दियनि आ आरं जखनि खागरना ले डी तँ रँजे छथि जे अ बसगुना डी, अ नानमोहन डी, अ जिनेरी तँ अ रँदमाली ! यो अखनि अमृतो हमरा जेन रिथे भ२ गेन अछि !”

घनश्याम राँरु कथी रँजता। रँकव-रँकव अँह तकेत बहथिन। एक तबले सोनाग रँजेत बहनथिन-

“ठीके कहारत अछि जे जितामे किदनि भात आ मुगनागव दूष भात। जाँ एतएँ। हमर मम ठीक ले अछि। हमरा ए पृथीगव सँ भोग उठि गेन। भगराणकेँ कहियन् जे उठा जेत। हमर कोला आस ले। पाकन आम डी कखनि खसर से कोला ठीक ले।”

कहि ठामे रिठोषव ओघवा गेना। घनश्याम राँरु देखिते बहना, अँहसँ किछु ले निकले छेननि। μμ





## हमारी भोजन

मथलाक माथ सिवारती दुर्गापूजामे साँस दगले केतौसँ एक पथिया टिकनी माष्टि अगल बहए । कमशेथापनसँ पहिल एक दिन दुर्गा लातन जेती आ ओही दिनसँ दुर्गास्त्रामे साँस-राती पड़त । सिवारती गवीर घबक स्त्रीगण बहए एकठा रैथी भेजे बहे, राँग साँपकरीमे मरि गेलथिन । तीसठा रैथीए भेल बहनि । उमेव कवीर सैमठ रैथक बहनि । रौंगल-बूता करि क२ गुजब-रँसव करै छेली । कोला तबहै तीनु-रैथीकेँ रिखाह केननि । रैथी सब साम्ब रँसए नगनी । मथला जूथनि रँट बहनि तहिँसँ दुर्गाजीकेँ पूजा करै छेलथिन । मसमे बहनि रँटा सब तबहै निरोग आ सुखी सम्पन्न बहत । दूदा तीनु रैथीकेँ रिखाहक खटमे तेना ल कोठ तोडा देनकनि जे जमीन्दारक टंगनमे हँसि गेला । जमीन्दार गन्दकास्तु रौरु तेहेन ल टँ जे जल रौगिहावकेँ गारि हज्जहत, जोत नानट कर्ज द२ क२ हसौल बहे छन । तथापि सिवारती अगल लम-ठैम ली छोट छेली । जूथनि रौंगल-बूताक पेरुख ली बहननि तँ रौमीकान पुजे पाठमे रितरौ छेली । रैथी मथला रौंगल करि क२ अ लथ तथनि गुजब कवए । मथला छोट रैथी बहल रिखाह ली केल बहए । रैथी धरि एतेक सगुत बहए जे माएकेँ माए बुनेत । अखुका मजदुव जकाँ ली जे कमा क२ अरै आ अदहसँ हाजिन ताड़ ए-दाकमे खट क२ छेत । हँ ओकरा रीड़ १ पीरैक आदति बहे, सेहो समेसँ ।

कमशेथापनक रौद खूँ दिग माले रौगलाती दिन, सगुमीकेँ भगवतीकेँ डिमहा पड़त । आँधि देला पडाति अष्टमी दिन निशोपूजा होए । कमीकेँ साँसमे जूथनि सिवारती साँस द२ क२ एनी तँ सज्जय पडनकनि-

“काकी, तूँ तँ सब दिन दुर्गास्त्रामे साँस दगले जाग छीली । कह तँ साँस दगकान भगवतीसँ कि सब कह छीली ? ”

सिवारती रँजनी-

“तूँ की बुनरिहिन, अथनि लना छँह । ”

सज्जय-

“ले दादी कहए पड़ते, कह ल हच्छँ दुर्गाजीसँ मँगि जेर । ”

सिवारती-

“ले, नग कहरौ । ”

सज्जय-

“ले, कहए पड़ते । ”

दूनुमे जिदम-जिद भ२ गेल । अत्रुमे सिवारती कहए नगनथिन-

“की कहरौ, कह छिए जे हे दुर्गा महाराणी मिया-पुताकेँ समाग दिहै, रिधा दिहै, धन दिहै, सम्पति दिहै, हमरो निरोग बथिहै । मएह सब कह छिए । ”

सज्जय रौजन-

“दादी ले, रीना कोला काज केल सभठा दुर्गाजी द२ दग छथिन, तँ तौरा की भेलौ जे लम-ठैम आकि पूजा-पाठ करै छीली, से तँ आग तक जराणीसँ बूठ १गा ओहिना छे । तौरव दिन कि ए अदिन भेल छे ? ”



मियारती रँजनी-

“रौ छोट 1, तू रँड पाखडी छै । एका बती रँजेत नाजो-सबम ल होग छै ।”

सँजय-

“लै दादी, तौली कह ल एतेक पुजा-पाठतँ तबि जन्म करैत एतँ ह्रदा तगसँ की भेलौ ?”

मियारती जेना दिलामे तरेगण गिणए नगनी । किछ रँजरोँ ल करै छेली । टुप देखि सँजय पढनकनि-

“रौक किए भ२ गेलौ । कौकका एकठा घष्टना दुर्गास्त्रानक कहि छियौ । काहि चिठुआक माए दुनारी ब्रह्मण भोजन आ फमावि भोजन करैले दुर्गास्त्रान आएन छन । ओकवा अणना घबसे टुड 1 लेन अगहनीओ घाण लै छेलै तँ बतीरौरूसँ कर्जा उठा क२ एक पसेवी धाण सुदिपव अणल छन ओकवा अणलसँ टुड 1 हठनक आ पटिस कपेए किलो महिसक दुध तीण किलो अणनक आ दही पौडनक । दोकाणसँ टिनी अणनक आ काहि अष्टमी दिस ब्रह्मण भोजन आ फमावि भोजन करैलेले गेन छन । सँग नागन पौता रीबेन्द्र सेहो गेन छेलै जेकब उमेव रीवह सान आ पौता डोनी जेकब उमेव आठ सान छेलै हुँहो गेन छन । दुर्गास्त्रानमे फमावि भोजन, ब्रह्मण भोजन, रँडुक भोजनक एतेक ल तीड छेलै से कहन लै जाए । एक-एकठा ब्रह्मण फमावि रँडुक दम गोठेक लात माणल छन दक्षिणाक लातमे जेना उजेहिया चढ़न होग । तेन ३ जे दुनारी जखनि अणना पवनीतकेँ टोपिब नावक रँड 1 रँवा क२ दुष्टा फमावि, दुष्टा रँडुककेँ केवाक पातपव टुड 1, दही, टिमी द२ तगरतीकेँ भोग नगोनहा नहु दु-दुष्टा द२ जखनि ओ लोकनि भोजन कवए नगनखिन आकि पौता डोनी कहए नगलै दादी हमाँ टुड 1-दही खेरौ । आकि दुनारी पौताकेँ गालेपव एक चमेठा नगा देनकेँ आ राजनि, टुप पहिल ब्रह्मण भोजन हेतेँ आ उगवतेँ तँ तौलो देरौ । पौता हरो-ठेकाव भ२ क२ काण नगलै । रँकव-रँकव ह्रहौँ तकेँ आ कनरौ कवए । एन्व पवनीत आ फमावि रँवा किछ सोचल निर्दज जकाँ थागत बहन । एकावती दया लै एले डोनीपव । सरान ठाठ भ२ जागत अछि, तँ तँ ली कह, की डोनी फमावि लै तेन ? की रीबेन्द्र रँडुक लै तेन ? जखनि कि शोम्ना-प्रवाणमे लिखन अछि दम रँवख याणी बज्जुरीना होगसँ पहिल कोला जातिक नडकी फमावि अछि । फमावि भोजन कवाँन जा सकैत अछि । ३ तँ फमावि भोजनरँवा भेलौ लै दादी, एकठा ओव घष्टना देखिअए जे किछ स्त्रीगण धनुक छैनीक आ किछ स्त्रीगण रँवङ छैनक अणल मिया-पुताकेँ न२ क२ फमावि भोजन ओही दुर्गास्त्रानमे कबोनक । ब्रह्मणो मभ तँ अणल मिया-पुताकेँ फमावि भोजन करैत अछि । कह तँ एमे कोण पौट छै जे ब्रह्मणोकेँ मिया-पुताकेँ फमावि आ रँडुक कहन जागत अछि ?”

“रौ सँजय, कह तँ डीही ठीके ।”

सँजय हएव कहए नगन-

“लौ दादी, जग दुर्गाकेँ तँ एतेक लया-ठेगसँ अर्चना करै डीही तेकवा रीलेमे किछ बुमितो छिहिन आकि भेडाँ या धमाण जकाँ मभकेँ देखे छिनी तँ तँ कवए नगैत छँ ?”

सुन महियासुव, शूँत, मिशूँत तँ एहेन आतातायी बाजा छन जे केकरो रौह-रौठीकेँ गळ्ळत आरँक नुष्ट नग छेलै । पहनका बजो-महाबाजो मभ एक-एक सए धौवरी बथे छन । तहिना अखुलका लता आ रँडका अफसव मभ होगए । रँहुत कमे लता आ अफसव आकि जलता गोन पखावन भेष्टेते । तेहल छन ओ महियासुव, शूँत, मिशूँत । जखनि रँड अतियाचाव, रँगिचाव बाजमे रँडने आ लोकक नाकपव ठेकि गेलै तखनि जा क२ केकरो एकठा नडकी जन्म लेनक ओ जन्मते जेना प्रतिभाशोनी छन, जेहल देखेमे सुन्दर तेहल काजोमे फुँतिना जखनि जराणीपव एले तखनि महियासुव



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ओकबोपव अणव खवाण नज्जवि दौड़ नोक, दूदा ओ हरती ओष्ठक ज्जराव पथेवम देनके । जेतकेके महियासुव सतोल डन ओ सत ओग हरतीके संग देनक तँ देखे छिहिन दुर्गाके दमठी हाथ छे आ सत हाथमे अस्त्र छे । सरहक सहयोगक प्रतीक छिए । जखनि सत गिनि कइ महियासुवपव चट ाग केनक तँ केतेक दिन तक नइ ाग चनन अस्तुमे महियासुव गावजे गेन । एमहव जे महियासुवक किना डेली तेकवा ओ हरती अहि देनके । तँ ल ओग हरतीके नाँ दुर्गा बाखन गेन । दुर्गाक नइ ाग दस दिन तक चनन । संगठनमे ल शक्ति होग छे । सएह शक्तिके माल दुर्गाक पूजा होग छे ।”

सियारती रजनी-

“लौ लौखा, एना हविडा कइ कहाँ कियो अखनि तक कहनक हेल ।”

संजय राजन-

“लौ दादी, केतेक कहरो । ओ सत रूियाव डन, आगु रँडन । ओकवा सरहक तुनना करेमे रिया-पुताके पठ ा-निखा अणवा कर्मपव रिसराम करेत गेन । ओकवा पढुअरे ले तँ थिहाव पढतो किल । अ जे साम दग रेरमे कहे छिहिन से की केतो बाखन छे जे तौवा दइ देतो । तौही कह जे केतोसँ टिकनि माँष्ट नइ अलले हँष्टनहा कपड ाके रौती रँगा ककतेनमे तिलेओल एनही आ एकठी अणवरतीसँ दुर्गास्त्राम साम दगले चनि गेलै । खवाटा तेनौ टाविओ आना ले आ माँगि लेनहिन नाथोक सम्पति । केतसँ भेठेतौ । समाजमे जे अणुअणव अछि पहिलसँ आ अखला अछि ओ सत अणवा सुख-सुरिधा लेन जान रूणल अछि । अणकथ समाजक लोकके दिशाहीन रँगा कइ अणव गोष्ठी नान करैए । हमरूँ तँ रूमि-सूमि कइ कथला कान तँमिआगए जाग छी । जाति-धर्मक नाँपव कोठनीमे कोठनी छे । जेतके जाति तेतेक देरता । रँडकारे रँडका देरता, छेठकारे छेठका देरता भवन अछि ।”

सियारती रजनी-

“गौके कहने लौखा, आर मोटि-सगमि कइ कोला काज कवर ।”

संजय कए नगन-

“लौ दादी, तोजन-भात आकि वहन-सहन ल सुझक वहर छिए । हम तँ तँ कठपुतनी जकाँ जेना-जेना नचरे छे तेना-तेना नटे छे । तँ ल कहरी छे कए नगोष्ठीरना आ थाए गौतीरना । तँ कहरो, खुर कमा-खठी खुर थो-पी, रिया-पुताके पठ ा-निखा जखनि रिया-पुता पठि -निधि लेतो आ लाकरी-टाकरी आकि अणव काज-धवा भइ जेतौ तँ अणव देखरिहिन जे सुझक भोग कइ वहन छी । सुथे ल जिगगी छिए । हमावि तोजन कवा आकि पूजा-पाठ कव, तीर्थ-रित कव, लम-ठेम कव सतठी अणव रूमि-रिरेके काज देतो । केकरो कष्ट ले दहिन, जहाँ तक भइ सकौ केकरो उगकाले कइ दहिन सएह सतसँ पौष घर्म छिए । कोष सुठ-सुमिक हएडमे पडन बहे छै ।”

सियारती रजनी-

“लौ लौखा, एतेक जे पूजा-पाठ आकि धवम-कवम होग छे सत सुठे छिए की ?”

संजय पुनः कए नगले-

“लौ दादी, सोम शिदमे रूमली जे अणवसँ प्रकाशि दिस आले सएह तेन पूजाके शक्ति अर्थ आ नीके काज ल धर्म होग छे । भगराणक केतो अस्तुए छे ओ तँ तौवा हमवा आमेमे रँस छिहिन । रेद तँ रँरहावीक जण छी, शिद-पुवामे निखन अछि जे भगराण क-कामे रँस करेत अछि तँ कि हमवा तौवा जोडा क ?”

## कीर्तन आ सन्मान

रहूत दिसक रौद आशा पूरा भेलनि घुमव रौरूकेँ । अपनै तँ कएकथा दूधिया चूमार नडना दूद  
एकोरैव ले ज़ीत सकना । लोक हूणकव धूर्तेसँ परिचित छन । २०११ गमरीमे दूधिया चूमार भेल अपन  
नडकारेँ ठाठ केननि । नडका री.ए. पास टाजि-टाजि सेहो नीक छेलै । खानी का-जेज्ज जिनगीमे किछ  
खवाप मतसंग भऽ गेल छेलै तथापि नडननि । चूमारो ज़ीत गेला । गामक दूधिया भऽ गेला ।  
जगसँ २०१२ गमरीमे एकथा नराह-कीर्तनक आयोजन केननि । लोककेँ कहथि जे दूधिया चूमार ज़ीत  
गेलाँ तँ नराह कवा बहन छी आ माँ दुर्गाक करूना केले छेलियनि जे हम ज़ीतरँ तँ अहाँक दवरौवमे  
कीर्तन आ नराह करब । सएह खुरँ डीन-डानसँ नराह कीर्तनक आयोजन केननि । मसलेगाक तहत  
एकथा पौखविक उवाही छन जे एगावह नाथक योजना छेलै । दब-दियाद, हित-अपेछित सबकेँ  
सबकारी केषव नाँउ दर्ज कवा रोज्ज अस्वनी जेननि मजदुर सभसँ किछु ठीका भगवतीक नाँउप  
जेननि । हूणक माँहनथुआ छन रँगठा दूसहव । जे अलरो ताडि-दाक पीर कऽ अन्ष्ट-सन्ष्ट रँजेत  
बै छन । ओ रँगठा समवपित भऽ नराहमे योगदान दग छन । रँमाथ जेठक समग्र छन । समग्र  
रौदियाह जकाँ छेलै । रँगठा एक रीघामे पनवह किलो कर्ठुपव धानपव रँगठा केले छन । ओग सान  
गवामे टोदह-पनवहठी पानि नलीत बहए । रँगठा कीर्तनक पछुति कहियो खेत दिस ले गेल ।  
गमहवागक समग्र छेलै, पानि ले पडल गमहवा तीतरमे बहि गेल, फहवि-कहावि कऽ धान हूँछेलै ।  
कात-करोठेमे सरहक धान नीक छन । रोटावा रँगठा एक दिस घुमेत-घुमेत खेतक आर्डा पव गेल तँ  
ममाण भऽ खसन । कइ ! ए नराहक पाडौ तँ खेतीओ रूँडा गेल । कोला तवहक नाभ भेल... !  
एहव गाममे कवीरँ पटीसँ लौबन गामक टाककात आ रिच्छामे ठँगन छन । सौसे गाम अलघोन  
भऽ बहन छन । केकरो मोरौगनपव जे केतोसँ हौला अरौ सेहो गप करेमे दिक्कत होग ।  
केकरोसँ गप करेमे कर्ठुन होगत । गप्पा कक तँ उँटे अराजमे । हँ किछु नर हरती आ स्त्रीगण  
सभकेँ जेना रोजगाव भऽ गेल होग जे जहिसाँ कनमे भवनक तहिसँ अवरा-अवरानि, हन-हनहावी  
माँम-भिषमव न्नाष कवि कऽ कनिक पुजा करब दसो दिसक रोजगाव भेटे गेल छेलै । कीर्तन  
मडनीकेँ तँ रँतीसो आशा नहए । दसो दिसक हिस छन एकैस हजाव । नीक निहूत जनथे-भोजनक  
आयोजन । दसव दिस जनथेव आ साँपुडक ताडि छन सैतीस हजाव । साँपुडरँना गद-गद  
बहए । पडीजी संकष्टमे जखनि पाँट सए एक ठीका जेननि तँ पूर्णहूतमे केतेक जेता । एहव  
आयोजककेँ टैन ले । कथिजे एको घँठी कीर्तन कवता आगत-भागत प्रसाद रँगठेमे तराह । नराह  
दसव दिस सङ्गल भेल । सङ्गल होगते आयोजक घुमव रौरूकेँ कियो कहनकनि-

“जे एँसँ ले भेल । अठ्ठजाम कीर्तन सेहो कागए निअ ।”

तुवसु हएव अग्रयाम कीर्तन सेहो शुक भऽ गेल । अग्रयामकेँ समाप्त होगते पडीजी घुमव रौरूकेँ  
कहनथिन-

“एँ यत्रक पूर्णहूत रिषा सन्भावण भगवणक पुजाक केना हएत ।”

तँ वातिमे सन्भावण भगवणक पुजा सेहो भेल । कीर्तन मडनी सभ रौजग-

“रिषा साधु भुडवाक कोला सफलता ले भेटत ।”

तुवसु एक-सए-एक दूवतेक साधु भुडवा भेल । गाममे धर्मिक अर्थीव नगि गेल । दूदा ओग  
अपगत मजदुरकेँ धुनि प्रदुषणक चलेत आ आला-आला रँवदाहठसँ सग-सग श्रेमक पागसँ खेना-रैना  
भेल तेकव के नहना-लोकमान गलरँना ? ठीके कहरी छै मान मवए दूसरौ आ थए हलूसरौ । कीर्तन  
तँ ओ भेल ल जे कोला भगवणक प्रतकेँ अपनो उँपव नागु कवी । से ले करब । हूणक प्रत हूणके  
नग बहए दियव । वाम-प्रस्तु हमरो लोकनि जेन उँदाहवा अछि । निरिह हूणके प्रत केनहाकेँ अपनारी



जे ऋषि-ऋषि कहि गेला से ले असनी धर्म भेन । के रिशा शीक काज केले पुजनीय भेना अछि । दोसब दिस करीब पंथी सन्धानक आयोजन सेहो भेन । जखनि प्ररचन शुक भेन आकि एकठा तेसबे रिहंगवा ठाठ भ२ गेन । मटक अध्यास रचन रंशि आ प्ररचनकर्ता पावथीगतक अङ्गनाब गण उठले-

“आर्णद भेटै रएह सुआ । मनुषे सरहक कर्ता-धर्ता अछि । भगराणक भोग नगारी ले नगारी रा तुखले बाथी ।”

तर्क बहनि-

“ऋसनगाम गसनगामके माले छथि, गसाङ्ग गणके आ हिन्दू बास-प्रश्नके माले छथि, तहिना सीध गुकनाणकके माले छथि । सब धर्मक लोक एक दोसबके निन्दा सेहो करै छथि । हमर पैघे तँ हमर पैघे । किएक ले गसनगाम ऋसनगामक खेतमे पाणि द२ दौ । बास-प्रश्न हिन्दूक खेतमे रंथी द२ । से कहाँ होगत अछि ? सब मणगठनु अछि । हँ पाँटो देरता अरसम छथि जेन, आगि, धवती हरा आ अकाम । जे सरहक जेन रंवरि ।”

तग रिच्छेमे सरान उठले करीब दामक जग्यक समरंषमे । दोसब सरान बहे करीब दामक नशिने हिन्दू मुसलीम रंष्टि जेनक तग समरंषमे । तेसब सरान बहे लेदक रिटावधावा आँव करीब दर्शनक समरंषमे । जहाँ ले कि बागर्णिकब सहरि रंजना-

“रिशा मूनी-पुकरक संयोगे केतो रिशा-पुता भेलेए ।”

तँ कियो लोक लाजक चलेत अरिध समरंषधरानी क्मावि अगना रंटाके पोथविक कण्डविमे हकि देनक । जेना-तेना आले पोसनक-पाननक । रैदिक धर्म करीबक दर्शनमँ मिलेते-जूलेते अछि । रेरहले ले लेद अछि । मृतमे करीबक नशिने तीतले साजिमेक तहत दफना देन गेन आ चदरि उठ । एकठा युन बधि देन गेन । जे हिन्दू-ऋसनगाम अदहा-अदहा रंष्टि जेनक । आकि अध्यासके खोत हकि देनकनि । हना भेन ! सहीके केतेक काज डिगाँन जएत । अध्यासक अध्यासता समाथ क२ देन गेनि । दोसब अध्यास चून गेना । तखनि हकि कर्णिकब सहरि रंजना-

“यो श्रिता लोकनि, करीब पंथीउ तीध तवहक होगत अछि । एकठा रचन रंशि, दोसब अग्निबरादी आ तेसब पावथी । सहे रात खोटाह होग छै । जहिना महिना रिगाव करैते अछि पुकरके विमरंजे तहिना रंराजीउके देखियन् एकरक हाथक दाठी, दु-दु हाथक केने, चामागत कपड । देखैएले ले दाठी रंठ । क२ सीताहवा भेन जेन । अग्निबरादी सभठा अग्निबक उपासा देता ऋदा अगले कवता उकर रिगरीत । पावथी कोना दृष्टातेके सही गनतेके रंमि क२ रैत्राणिक तर्कके मणि मोना जकाँ आगिमे रिगा क२ रंजता आ कवता । टोगी-ठकक चलेते देशिक अ हावति अछि । ऋहमँ किछ रंजता आ करै रेंव किछ कवता । एकठा अमेरिकन रंराजी अ रेंवका क्म मेनामे गनाहाराद अएन जना । उ मुती सभके देखि क२ रंजना, जितना भगराण ह हिन्दूनामे सब आठकरादी ह क्योकि सरो के हाथ मे अम्र-शम्र ह । अम्र-शम्र के रंदोनत बाजा क्म कवता चाहते पे । प्रश्न ह करीब क्यो कि उषके हाथमे रंसुवी ह । लेकिन करीब के हाथ मे क्या था कोग रंतारै । गुकनाणक के हाथ मे क्या था । गसनिए आज के समय मे करीब कि जकवत ह । जो रैत्राणिक तर्कब खड । उतवता ह । रही पुजनीय ह ।”

अण रंकतर द२ शंकब सहरि प्ररचन समाथ केननि । ॥॥



## मूर्दा

बामेश्वरके जखनि मोडक पोगह एले तँ एक दिन बिया-पुताके खेतत देखि भार-रिबोव भन्ने गेल । मल-मल मोटा नगन हमरुँ तँ एक दिन अहिना बिया-पुता बहन हएर । माए-बाँरु हमरो कोवा-काहपव नन्ने कन्ने खेतत हेत । बामेश्वरक पिताक नाँउ छैननि रँसव आ माएक नाँउ कनारती । रँसवक उमेव कबीर पचपन आ कनारतीक अंबतानीस रँथ बहनि । नीक गिबहुत । दस बीघा खेत जेतनिहाव । दररँकापव ठेकठेव । कामधेनु मल एकठाँ जवसी गाए बहनि । कनारतीकेँ मात्र एकठाँ रँथी आ एकठाँ रँथी छैननि । तेकव पढाति उंगवेशन कवा लल छेनी । रँथीक नाँउ सुगारती । पहिल नडकी तँ रँड दुनाव खस कन्ने माए जेन होगते छै जे बहरो कवनि । माएकेँ जेतके पिअवगव रँथी होग छै तेतेक रँथी ले । रँथी जखनि अठावह रँथक तेन छन तखन ओकव रिआह निर्माक सुरोधकात्रुसँ कवाँन गेल छन । सुरोधकात्रुक परिवार जमीनदार तँ ले दूदा नून-तेन आ कपडक दोकाष नीक छै छेले । परिवारो छोट-डीष । सिबिफ माए बाँप आ दु भाँगक तैयारी । रिआहो अधुनिक ठगसँ तेन । धूम-धवका मानी डिजे रोजा मंग नगभग छेठ मए रँसियाती आएन छन । दाहा दहेज नीक जकाँ देनथिष । सुगारती मान्नुव रँसव नगनी । एहव छोट रँथी बामेश्वरक पठ-निथेमे रँड तेज । कोला रझमे हसुँ सकेस छोट तेसव ले तेन । जखनि री.एम-सी.क सकेस पाँठ छन तखनि जा कन्ने घण्टा घण्टेले । छोट रँथी बहने तहुमे एकलौता । एकलौता रँड दुनाक होगते अछि । माए-बाँप जेन तँ अधिक तारा छन । रँसव अगल गिबहुत कवनि । एकठाँ लोकव रिनेतिया ठेकठेवक डेवरवी करेत आ दोसव लोकव पिचकुष घव-बाँहवक काज देथेत । जहिला रँथीक प्रति अगाध प्रेम बथे छन तहिना गाएक प्रति सेहो । पहिल देहाती गाए पौसि छन जेकवा खाँ-पीरैले देखिष दूदा दुधक रँवमे मात्र किनो भनि भिसव आ आध किनो माँसमे होग छन । सेहो कोला माँस मुस भन्ने जाहनि । एक दिन तदुबियाक शिर कुमाव डाकठव घुमेत-घुमेत रँसवक अँठाम एना आ जवसी गाएकेँ मरुँधमे रिटाव दैत कहनथिष-

“अ जे देहाती मनक गाए पौसल छी से आँर छोट । जवसी गाए निअ । तेतेक ले दुव दैत जे अगला थाएँ आ रँचरो कवर । जवसी गाए तँ ओहन कामधेनु होगते अछि जे मगले नख-नखा, खुँष्टापव कावी गाए बहत से शुभ तेन, दोसव मानमे एकठाँ रँडा रा रँडा दैत । तेसव गोरवसँ जावनि आ खेतक उँरवा शक्ति रँठरैमे काज दैत । बंग-रिबंगक काज कन्ने छी । नगदी आमदनी जेन दुव कामँ कम रँस नीठव तँ देरै कवत । पाँठ नीठव अगला खाँगेले बथि जेर आ रँकी दुकेँ रेगारी हाथे रँचि जेर । भावततँ प्रथि प्रधाष देशि अछि ए अमी प्रतिशत आमदी खेतपव निर्भर अछि । तँए कहँ जे जवसी गाए निअ हमरुँ अहाँ मंग मरुँणी जाएँ आ अँठामसँ नीक नन्नकेँ गाए कीनि देर ।”

रँसवक रँजना-

“नीक छै । कहिए चनन जाँ ।”

रिहाल ले शिर कुमाव डाकठव रँसवक बाँरु आ एकठाँ लोकव पिचकुषकेँ मंग नन्ने मरुँणीसँ सहिरान नन्नक दूठाँ गाए एकठाँ रँडा तले आ एकठाँ रँडा तले कीनि अणनि । मएह गाए रँसवक खुँष्टापव । गाममे चर्चक रिथ रँनि गेल । हविदमा पाँठ-दस गोठे गाए देखेले अरैते-जाँगेते बँह छन । शिर कुमाव डाकठव तेहन ले गिनसव लोक जे हविदमा केकरोसँ गंग-मप कवता तँ हँसिते । रँसल ले जाँगेते जे एतेक नीक डाकठव मन्मावपुवक पाँठ कोस दोतवहामे तेठेत । खस गुा हूकामे तँ अ छन जे जग रिमावीकेँ ओ ले जगत तँ अणसँ उँपवक डाकठवसँ मनाह नन्ने कन्ने गजा कवता । तगसँ मगले माष-मनाष खुर तेठेत छन । हिसो आष डाकठव जकाँ ले उँचित मजदुरी उँचित



दरौगक दाम नग छथिष । एम्हव रैसधवक चर्चा गाममे हुंख नगन । रैसधवो पहिन दिशका दुध दव-दियाद, हित अपेक्षितमे रौंष्टि देनखिष घबषव जे आला दिष कियो आरिषि तँ रिषा चह-पाष रा जनथेक ले ज्ञा देथिष । समाजिको काजमे तष-मष धनसँ योगदान देथिष । तग सभसँ समाजमे एकठो खनगे माष-समाष भेटै छेनषि । किष ल भेटैतषि, कहरीओ छै जे मष हर्षित तँ गारी गीत, टाक उडी सुनेरँ छनहि ।

जेषा केकरो नीक, दुष्ट, आदमीकेँ ले देखन ज्ञाग छै तहिषा भगुरालाकेँ ले देखन गेनषि । एक दिष रैसधवकेँ ज्ञाषसँ मारिष क२ भगुरालाकेँ टेष भेटैनषि । भेलै ३ जे रैसधवकेँ सवाषा रौंखाव नगनषि । रौंखाव कोला दरौगकेँ सुनरौंग कबिते ल छेनषि । गामसँ न२ क२ दवडंगा तक गनान्न करौनषि दूदा कोला सुनरौंग ले भेनषि । हिया-हावि क२ घबषव आरिषि गेना । रिडान ध२ जेनषि, शिबीव तँ सुखा क२ सँठी जकाँ भ२ गेनषि । केतए ओ दोहावा हाव-काठक शिबीव नान दूगरी जकाँ । ओ आग केतए गेनषि से ले कहि । पशो कनारती तँ हुंष्टमे हरो-डकाव भ२ भ२ कलैत बहै छेनी । रोटावी कनारती स्यामी भुक्त कहियो पतिक आदेशेकेँ अरहेनषा ले केनषि । रोटावी मोघेसँ एक हड्डा भ२ गेनी । रौंष्टी जे कोलेजमे सकेसुड पार्थ री.एस.सी.मे पठ छेन से घब आरिषि गेना । वामेश्वर हविदया मोघेमे दुमन । खष रौरू जेन पाषि तँ खष दरौग तँ खष पथ पवहेजषव रिगान दैत बहै छेना । एक दिष तीष रैजेकेँ समाए छेन । पशो कनारती स्यामीकेँ पधव नग सेरा क२ बहन छेनी तखल रैसधवकेँ हिचकी उठैनषि आ प्राष तियाषि देनषि । कनारतीकेँ हुंष्टे दौती-पव-दौती नागध नगन, हरो-डकाव भ२ रैगहावि कष्टए नगनी-

“यौ चन्दनरौ ! हमवा छोडा केतए पवा गेलौ यौ ! आरँ हमव देख-भान के कवत । के आरँ एतेक सभतिक भोग कवत । केकवा हम स्यामीनाथ कहरौ ।”

रोटावी वामेश्वर दोसव कोठनीमे सुतन छेन । ओहो दोग क२ आधन । पिताक मृत शिबीव देखि क२ ठकदूडी नषि गेलै । रौंहेषि भ२ धवामसँ खमन । दौती नाषि गेलै । तारैत दव-दियाद गौंखा-घकषा सभ पछुंछए नगन । सरँहक दूहसँ एक्क शिष्ट, निकलै-

“अणहेव भ२ गेन ! भवन-पुवन परिवार छोडा क२ रैसधवरौरू छनि गेना । हमवा सरँहक खुंष्टी छेना । आरँ हमदू सभ अनाथ भ२ गेलौ ।”

दोसव दिष वामेश्वर दूदा जकाँ एकाग्रमे रैसन । आँखिसँ लाव खमि बहन छेन । कियो कहै-

“जन्दी हिनका तुनसीटोवा नग उतवदूहेँ सुता दियष । गाए गोरबसँ ठाँडि कवि क२ सुता दियष ।”

कियो रैजेत-

“जन्दी कपड । नाँ ।”

“जन्दी रौंसक ठैठी रैनाँ ।”

“दूगनकेँ जेतेक जन्दी भ२ सकए, जवा दी ।”

दूदा रोटावी वामेश्वर सरँहक रिटाव सुलैत । एकठकी नगोल मोटेत लोकोकै रिटाव अजारे अछि काहि तक जे पिता एतेक नाव-प्याव देनषि प्राषक आधाव छेना से आग दूदा... । तहिषा लोकौ रौंजि बहन अछि । गामक रूठ-रूठ णस रैजथि-

“की कवरँहक, सरँहक मएह गति नोग छै । रोटावी रैशिव आग भवन-पुवन परिवारकेँ छोडा सुनषाव गेना । तदूँ कि दूदा भेन ठाव छेन । ३ ल दूगना । दूदा अखनि जेतेक लोक देखै छेनक, जखनि मेही नजबसँ देखरँहक तँ सभ दूगने जकाँ भेटैतह । जेषा प्रष्ट महाभावतमे अषष रिवाँ कष देखोले छेनखिष आ ककक्षेत्रक मेदषणमे सभकेँ दूगने



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

देखोल देवथिन आ हाफू लेन ननकावल बहथिन तहिना अ समाजो अछि । मही रात राजर, कवर मे कर् होग छै । अपन-पवाया मभके देखरहक निर्णय छै । देखरहक सामनेमे फर्कम होगत अछि रुद्रा रंजनहार कियो ले । कहत अपन आदमी छी माँसि दहक, रहए रिजक धावा भरीत-भरीत समाज आग एतेक अछि, भ२ गेन अछि । नीको अछि । केतेक कहरह छोट-मोट-पीड लके । जे हेरक हेते मे रहत । दहिना हाथमे कोहा आ बाया हाथमे आगि न२ आ रंसधवके दाह संस्कार क२ दिग्य ।”

तेवाति दिन गौआँक रंसव भेन, भतथोखा पट मभ भोजक गतजामे रंसत भेन । कियो रंजेत-

“गुञ्जीक धागा तँ अपन सरहक पास अछि ले, जेना-जेना कहरनि तेना-तेना कवए पडतनि । तीण दिन भोज कचरि-कचरि क२ थाएर ।”

भोजक हिसारक क२ बहनि, नह-केशे दिन भत-दनि, एकादशीके छुड १-दही, द्वादशमे पड १-तवकावीपव नानमोहन-कमगुनना । पात्र-पुवहित लेन पंचदश-सवाध, रिखाएन गाए राजीक रंग रतन-रंसन, कोट, तैसक-तकिखा, कपड १-नता सहित मभ किछ दाष कवथि । कोला कि रंथी अपन कमनहा दाष कवत, राँपे तेतेक ले अवजि देनकनि जे भोग करैत बहत । किछ जमीला-जतथा रंथिनापव एहेन प्याकाज कवरके चाली । माए-राँपक सवाध कि दोहवा क२ होग छै ।

अर्जुनराँ रंजना-

“ले वामेश्व, हमर रिचाव सुनह जे लेभर हुअ तेतेसँ निमहि जा । समाजक पेट-पाँके तँ अथनि ले ले रंसैत छहक, आले कहिओ समाजक रीचमे बहनह । मभ दिन राँहरे बहनह । घबक भाव कहियो रंसनहक कर् । दाँला-पुनक कोला गता छै । कोला सीमा सबहद छै । पुवहित-पातके केतलो देरहक तेयो ओकव मस मुसे बह छै । दाष तँ ओकव छिँ जे उंगभोग कवए, अ ले जे रंजावमे जा क२ रंथि निअए ।”

वामेश्वर द्द १ डोनरैत रंजना-

“ठीक छै ।”

ठीक छै कहि, तहिना कवरौ केननि ।

कणी दिनक राँद वामेश्वरक गाएक रंछा मवि गेलै । लोक मभ राजए नगन-

“जग गाएक रंछा मवि जाए तग गाएक दुध ले दूहक चाली ।”

अ राँत सुनि वामेश्वर गाएके दूहगाग छोटि देननि । शिरफुमाव डाकूठवके जथनि पता नगननि जे रंसधवरारँ सरशराम भ२ गेना तँ जिगेसा कवए एना । रंसधव राँरुके त्रिर्हाजनि द२ वामेश्वरके साणत्रणा दैत पुढनथिन-

“गाए ठीक-ठाक अछि किल ?”

वामेश्वर कहनकनि-

“ले, रंछा मवि गेलै । लोक मभ दुध दूहरे मसा क२ देननि ।”

डाकूठव सहरे ताममे रीथ भ२ रंजना-

“गाएसँ तँ दुधे ले लेरौ आकि हव जोतन जेते । कोष मडन-गनन रिचावमे लीखाग छी । नगदी आमदनीक सात अछि । आमदनी हनेनासँ कमजोव ले हएर । पडन-निथन छीहे रंसिँ काज लेत चनु । लोक अहिना फुटिचानिरेना राँत रंजेत बह छै ।”



सतमाध

माह्रतुमी, ढौमाता आ माध तीनुके केतला रर्षण कएल जाए तैयो कम्मे रहत । जे माता आकि प्रेम माधमे होगत अछि, संयोगे केतो अग्रत भेटैत । अणन माध तँ मागए होगत अछि । केतो-केतो सतमागयो जीरण सुधावमे माझ दर्शक रर्षि जागत अछि ।

सुधीबके र्षिआह तेना मात्र तीण सान तेन छन । सुधीबक चाबि भाँगक तैयारी छेलै । चाक भाँग खेतौएपव निर्भव छन । मात्र सात रीघा खेत, परिवारब नमहब, दूदा खेतौ तेना क२ करै छन जे पनबह रीघारनाके कण कष्टे छन । पठन-लिखन कोला खाम ले दूदा जाणकारी रैसी छेलै । माध-राँग, दादा-दादी जीरिते छेलै । सुधीबक र्षिआह नम्मा संग तेन छन । शीटलो तीनु भाँगक र्षिआह भ२ गेन छन । सुधीबक र्षिआह तेना तीण सान तेन छेलै तखल जा क२ एकठा नडकाक जन्म भेलै । छुट्टियाव दिन भोज-भात भेलै । परिवारबमे पहिन नडका जन्म लेल खुशीक नहब दोग गेलै । पमबिया टोनकीपव नाछए लागन । सुधीबक माध-राँग, दादा-दादी दिन खोलि क२ दण देनक । रँचाक नाँउ बाखन गेन अणमोन फमाव, रँचा जहिया देखरामे सुन्दब तहिया हिस्र-फुस्र शीब । रँचाके देखिते केकरो मोण भ२ जाग जे कोबामे न२ खेलैरैतो ।

जखनि अणमोन फमाव छह मासक तेन आकि माध र्षिमाव पडा गेली, डाकूठब प्रभाव नग न२ जाएन गेलै । रोगीके देखि डाकूठब प्रभाव कहनखिन-

“हिनका पेठमे कने बहि गेन छन्हि । र२ह कष्ट जकाँ भ२ गेननि । कोला टिन्हाक र्षियस ले अछि ठीक भ२ जाएत ।”

दरौंग-दाक तेननि दूदा ठीक ले तेनी । बातिमे सुतनी से सुतले बहि गेली । डाकूठबके अचन्हा नागि गेननि । अ की भ२ गेलै ! गेनिहाबके के रोकि सकैत अछि नाशिके घबपव आणन गेन । परिवारबमे कोहवाम मटि गेन । परिवारबक सब सदस्य जेना रौक भ२ गेन । जनिजातिसँ अणमामे तीड नगि गेन । कियो रँजेत-

“अ छहमसुखा रँचा केना क२ रँचत ।”

कियो रँजे-

“भगराण अँ रँचा तेन रँच अन्हास केनखिन ।”

जेतेक दूह तेतेक रंगक रौत । खेब जे किछ, दाह संकाव, नह-केस सम्पन्न तेन । सवाधमे एक आदमी रँजले-

“हमबामँ छेठे दूगन लेन तँए हम केना ओकव सवाधक भात खाएँ ।”

दूदा एगावह जन्म पुलेनाग अछि । कोला तबहेँ एगावह जन्म न२ क२ सवाध तेन । हनाँकी नहो-केस दिन पात्रक संग सुधीबके दक्षिणाक सम्पन्नमे नणमष्ट भ२ गेलै । सुधीब रौजन-

“स्यो सबकाव, जरौण-जहान दूगन लेन । रँचा अनाथ अछि । रूठ दादा-दादी अछि । कोला तबहेँ उछाव क२ दियो ल ।”

महापात्र मालरना ले । तँए रँमष्ट भेलै । पात्र रँजे-

“कियो मवते तगसँ हमरा की, हम कि कोला तुमि-डेदन करै डी । हमब दोकाण तँ य२ह डी किल । हमब पुजबक वस्ता तँ य२ह अछि किल ।”

खेब, कोला तबहेँ सब किछ सम्पन्न तेन ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पविरावो कोलो तवहेँ समवए नगन, देथेत-दैथेत तीण मान रीति गेन । कियो कह-

“लेो सुधीव दोसव रिखाह क२ लेह ल ।”

सुधीव राजन-

“दोसव रिखाह कवरँ तँ ए रँचार्के की छत । सतमाए भेल ऋभेजे ल हेते । हम रिखाह ले कवरँ ।”

पविरावोक लोक रूमरै दूदा सुधीव मालेजे तैयाव ले । सुधीव समाजिक लोक तँ कियो-ल-कियो दवरँरूपव अरिते-जागत वहे छन । दूदा एनिहावकेँ कम-सँ-कम चाह-पान हेरौक तँ चाली । से एक दिन ममिनी भारोकेँ चाह रँलरैजे कहनि । ओ थोका ज़रारँ देनकनि-

“के हरिदमा चाह रँलरैते बहतनि, रिखाह क२ जेत से ले ।”

सुधीवकेँ रँड दूख भेननि । कवता कि मम मसोमि क२ बहि गेना । एक दिन अणमोन हमाव आठ रँजे जे पौखाना केनक से दम रँजे तक कियो ओकवा डोड कलौनिहाव ले । दम रँजेमे जखनि सुधीव एना तँ रँचार्के देखि क२ रूकोव नागि गेले । रँजता तँ केकवापव ? दादी पाणि ठावि डोड कलौनथिनि । पढाति अरुष्ट-सरुष्ट खुतोहूपव रँजरो केनथिनि । सुधीव सोचना आरँ रिखाह केनाग अगिरार्य अछि । टाविस-पाँचिस मानमे जा क२ दोसव रिखाह कलेक मम रँलौननि । मममे उठननि, एक रँव सासुव जा क२ सासु-सासुवसँ रिटाव न२ नी । सासुव रिदा भेना । रंग नागन अणमोन हमावकेँ सेहो जेल गेना । सासुवमे आगत-भागतमे कोलो तवहक कमी ले बहननि । सासु कहनथिनि-

“पाहुन, कि ए ल ऋनिष कथा, नीक घव देखि क२ रिखाह क२ नग छथि ?”

सुधीव किछ ले रँजना । तीण दिन सासुवमे बहना पढाति आपस आरँ गेना । लोकक अमिबराद जेना काज क२ गेननि । नीक घवक एकठा नडकीकेँ रिखाह कवरँजे घटक, सुधीव एठास पहुँचन । नीक तवहेँ डाग-रीग केना पढाति सुधीवक दादा हँ भवि देनथिनि । सुधीवक दोसव रिखाह रूँटीदाग रंग भेननि । जेहल रँवतुहाव कहल बहनथिनि, तेहल नडकी रँरहाविक छेनथिनि । अणमोन हमावकेँ कोलो तवहक ऋभेजे कहियो ले केनथिनि । ऋपीटागि रानी स्त्रीगणक कमी तँ कोलो समाजमे बहियेँ अछि । दूथ्र आदमीकेँ जेना अणकव नीक देखल ले जागत तहिना स्त्रीगणा होगत अछि, स्त्री जातिक दुःख जेतकेँ मर्द ले होगत अछि तेतेक स्त्रीगण होगत अछि । कोलो स्त्रीगण जे हँठ-दरौव अगणा रँटा रंग करैत अछि तहिना अगव सतौत रंग केनक तँ अड सी-पड सी तुवन्ते उँनहन जकाँ काणा-हूसी कवए नगत-

“कहूना तँ सतमाए छिए ले !”

तीनकेँ ताव रँषा क२ स्त्रीगण सत रँजए नगत । रँचार्के वंग-रिबंगक गंग-सप्सँ काण भवि दग छे । दूदा सुधीव सत रँतकेँ जलेत हरिदमा सतक वहे छना । अगणा माए रंग कहाँ सत, शैँ, नागन अछि, दोसव माएक रंग सत शैँ, नागन अछि, सतमाए । रँचार्क रँरहाव जेहेण माए रंग हेते सतमाए तँ ओहल रँरहाव करैत अछि । हँ रँसी ओहल सतमाए होगत अछि जे अगणा रँँठकेँ नीक आ सतौतकेँ अघना करैत अछि । दूदा केतौ-केतौ सतमाए मासादर्शिकक काज सेहो करैत अछि । स्त्री जातिकेँ अगणा सुभिमणक बफा जेन सुय आगाँ आरँ पडत । तहिना रँचार्के अगण पकयार्थ जेन सुय ठाठ हूँ पडत । μμ

## तकरीब

दूसनमास ठैलसँ दूहमास सहिरक पैगाम नऽ कऽ जमात निकलैरना छन । जहिया महजिदमे रैसाव भेल छन तही दिस कियो पाँच दिसक तँ कियो दस दिसक, कियो एक मासक, कियो चाबि मासक जमातमे जागल बाँट निखा लल छन । जमातोकै अगल निअम छै । जमातमे गेसिहाव अगल खेलाग-खेवाकक संग जागत आ दूहमास सहिरक रिटावकै दूसनमास समाजमे बथेत । जगसँ नीक रीतक प्रचाव होगत । समाज सुधवत । कैजूम सेहो दानिस दिसक जमातमे भाग लेनक आ जहाँ-तहाँ तकरीब कए नगन । एक दिस महजिदमे मेक नगा कऽ कैजूम तकरीबमे प्ररचन देरै नगन । तकरीब रँड नीक जकाँ होग छेलै । सतौथ धार्मिक प्रप्रतक, ओकरो मल भेलै जे हमाँ तकरीबमे भाग ली । सतौथो जा कऽ एकठाँ चैठायव किछ जगह खानी छेलै ओते रैस गेल आ तकरीब सुनए नगन । जुना दिस बहल महजिदमे रैसक जगहोक अडार छन । गामात करैत कैजूम तकरीबमे कए नगन-

“हम ओव आग लोग जो आलैरना दिसमे एक महिला का बोजा बथेगेँ उम मेँ सिर्फ दिस भव खावा रा पानी नही पीले मे काज नही चलेगा । उममे निअम पूरक दूह का बोजा, काण का बोजा, आँख का बोजा, हाथ-पँव का बोजा भी बथना है । जिसमे रूँवा रसतु को न देखना, न सुनना ओव न रौनना है । तँ जा कव अमनी बोजा होगा ओव सरौरँ मिलेगे ।”

हेव दोसर तकरीब स्त्री जातिगव देनखिन-

“ओवत को हमेशा पर्दामे बहना चाहि । नथ मे रौन तक दूमले मर्द का नजब उँनपव ना पडै ।”

तेसर तकरीबमे रौजल-

“अगव पड सी के घब किमी तवह का अछुटा खावा रँल तो रँगल के पड सी को उँममे मे पौवा अरँसु दे देना चाहि । जिसमे उँमके आमो को भी शान्ती मिलेगी ओव आगको भी शिरौरँ मिलेगा ।”

सतौथ पुवा तकरीब सुनलक । सुनना पढाति ओकवामे तर्क-रितर्क शुक भऽ गेलै । बोजाक समरँषमे मोदरी जे रँजना ओ तँ तर्क हाड अछि दूदा ओवत जातिक समरँषमे जे रँजना ओ आग-काहिक जुगक लेन केतेक जागज अछि । कहुँ जे आग रैत्रानिक जुग अछि । रैत्रानिक जुगमे स्त्री आ पुरुष समास अधिकार लेन नडि बहन अछि । तहुमे भावत प्रथि प्रथास देसि अछि । केना समुत्र हएत ।

पंचायत चुनारक सबगर्षा चलि बहन छन । गाम-गाममे दूधिया, सबगर्षा, पंचायत समिति आ जिना परिषदक चुनार हएत । सब गाममे सँठक आवसित कोठा अछि । पिगरोनिया गामक जे मोदरी छना हुनको भतीजी चुनार नडले तैयाव छेली । ओ पंचायत समितिक लेन महिना फेर छन । तँ भतीजी नसीवा खातुन पंचायत समितिँ लामिलेशिन करेल छेली । नसीवा खातुन पठन-लिखन एगावहमी तक । पिगरोनिया गाममेमे अधिक दूसनमास तँ जेतमे कोलो अस्वविधा लै लेननि । रँलोकक चिष्टिग सभमे भाग लेत, समाजक नीक-रँजाए काजमे गामादारी पूरक काज कवथि । एक दिस अगल हणैदवक संग दिरौषी आ होजदारी दूकदमा भऽ गेलै । आर ओ कोरँ कचहरीक फेडामे पडि चनता-सिबता सेहो भऽ गेली । सौलव मरि गेल, कियो हँसिहाव-दरौबनिहाव लै, तँ दूमक-दुनो भऽ गेली । नसीवा खातुनक ओकिन छना सुलेमान सहिर । सुलेमान सहिरकै तीण्ठा पनी पहिन पनीमे चाबि सनुान तीण्ठा नडका एकठाँ नडकी, दोसर अगला सबक गनाकामे छन तेकले संग सिखाह कऽ लेनक । अ



सदमासँ पहिन स्त्री जूरेदकेँ बापसँ भेले तैकरे सोपसँ मरि गेली । दोसरोमे पाँच सन्तान भेलनि, तीणठी नडका, दुठी नडकी, तेसब रिखाह एकठी गवीरें घबक नडकीसँ क२ लेनि तखुँमे तीणठी पिया-पुता एकठी नडका आ दुठी नडकी छन । सुलेमाण सहिरँ एक तँ ओकिन छना, रँजे-तुकेँ आ तुक मिनानीमे पावंगत । आरँ तँ उँमेले कवीरँ पौसँ-सुतुरि रँवख भुगए गेल छेलनि । पाकन-पाकन दाठनी, माथपव उँजवा शैपी गमाणदवीक सत नक्षत्र मोजुद । दूदा कपेखा ठँकेमे एक नखुँवक चतुव-चनक । कथला हाकिमक नाँपव, तँ कथला आहिमक नाँपव, तँ कथला घुसक नाँपव मोकिब सतसँ पौसा अँटि लेत । कामुक तँ एक नखुँवक छनाहे । नसीबा खतुण अणन दूकदमा नडँ रँसते ओकिनमे सुलेमाण सहिरँकेँ बखनि । नसीबा खतुणकेँ सुन्दरता आ टँनता देखि क२ ओकिन सहिरँ हिदा भ२ गेली ।

एक दिन कोरँसँ आपस पाँच रँजे भेला, आ नसीबा खतुणकेँ कहनिथि-

“सामने अहाँ अणन कागत तैगाव क२ निख । कोरँमे मो काँज देणाग अहाँक दूकदमामे जकवी अछि । ”

नसीबा खतुण किआँल गेली जे सतवँजक टागि जकाँ उँकठी टागि चेत । सुलेमाण सहिरँ देवा न२ क२ नमानपवमे बँह छथि । ओतँसँ कोरँ आरँजाली करै छथि । तेसब स्त्रीकेँ देवापव बखल छना । ओ केसरो रँजाव दिस समाण न२ गेल छेली । देवा खानी छन । सुलेमाण सहिरँ कामुक नखुँव नसीबा खतुणपव दौड । देनथि । केते तवहक भय आ जोतो द२ क२ अणन कादुक गछा पुँति केननि । अँ तवहेँ आरँ समए-समैपव नसीबा खतुणसँ गनत रँरहाव कवए नगना । जखनि नसीबा खतुणकेँ छह मासक प्पेठमे रँछा भ२ गेल, ओकवा आरँ अणनसँ दूरे राखए नगना । नसीबा खतुणकेँ उँपव-मिच्छाँ सुमए नगन । एक दिन ओकिन सहिरँकेँ प्पुछनिथि-

“अहाँ जे कहल बनी जे निकह कवरँ मे कहिया कवरँ ? ”

ओकिन सहिरँ ताँमे आरँ रँजना-

“की कहनिए निकह ! की हमरा स्त्री ले अछि जे दोसब निकह कवरँ । जाँड एतसँ ! ले तँ कँठपव हाथ द२ क२ भगा देरँ ! ”

आरँ तँ नसीबा खतुणकेँ टोह आरँ गेल । ओग दिस तँ घुमि आएन । दिसाग अशोषि भ२ गेली । देहमे जेला अँगि नगि गेली । स्त्री जाति जहिला ममाता कपी माए आ रँहिन होगत अछि तहिना एनापव ओ कानीओ कप धावण करैत अछि । सएह कानी सन कप रँना एक दिन कोरँक ओकानत खानामे गेल आ सोपे सुलेमाण सहिरँकेँ भरि दूष्टी दाठनी पकडि मुना-मुना क२ कहए नगनि-

“अँ जे हमरा प्पेठमे छह मासक रँचा अछि तैकव की हएत ? ”

ओकिन सहिरँकेँ किछ फुडरें ले कवनि । दूडनी गौतल गूठ ! किछ रँजरेँ ल कवनि । तौ, तौ नसीबा खतुण जोव-जोवसँ रँजेत-

“ओकिनक कवतुत देखि निगब । हमरासँ निकहक रादा केले छना । हमरासँ अणन काम-पिगासाक पुँति केननि आ प्पेठमे छह मासक रँचा अछि । आरँ की हएत ! ”

एतेक रात सुनिते ओकानतखानामे लीड नगि गेल । लोक सत ओकिन सहिरँकेँ धुवडी-धुवडी कवए नगन । ओकिन सहिरँ ताँमे आरँ नसीबा खतुणकेँ गानपव एक चमेठी मारि देनथि आ पँवसँ एक अँड नगा देनथि । आरँ तँ आरौ तेसब काँड भ२ गेल । नसीबा खतुणकेँ ओकिन सतसँ आ किछ दर्शको सतसँ सहणतुति भेठेली । लोक सत रँजे-



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“कछु तँ ओकिन सहिरैकेँ असगवमे पणवहठी मिया-पुता छन्हि, रैठी, रैठी सभकेँ मिया-पुता भऽ गेल छन्हि । अपणा उमेव तेतेक छन्हि जे दाठ १ केस पाकि गेलनि । तँ एतेन काज केना । रँड अग्राय केननि !”

स्त्रीगण सभ रँजेत-

“रँड छद्दव ओकिन अछि !”

नसीबा खातुन कोठमे रँगतकाबी झुकदमा डायव कऽ देनकनि । पुनिस स्रजमाण सहिरैकेँ पकड़ा कऽ जेन पठा देनकनि ३७ दफामे । आरँ जेनमे पाँच रँखत बमाज अदा करै छथि आ केदीकेँ रीच तकवीव करै छथि । केजूम जे जमातक अगुआ छन तिनका संग तेसरे घटना घटननि । केजुमकेँ चाबिठा मझका । चाक मझका अलग-अलग, केकबोमे केकबो मिलाए लै । एतेक धरि जे केजुमकेँ देखनिहाव अगल रैठीए लै । रैठी सभ रँजेत-

“रँड तकवीव करैत बहै छना, आरँ खाथू-पीरथू आकि ओबहोष-पिणहोष करैत बहथू । कमेता खठैता नहियेँ आ खेता नीके-मिफत !”

ममिना रैठीक घबमे झुर्गी हवाग भेल छन आ गहूमक आँठीक दलिपुड़ा १ रँगत छन । घब-अंगना गमा-गम करै छन । केजुमकेँ मस होग जे दुष्टी पुड़ा १ आ झुर्गी हवाग केनहा, दगतए तँ खेतौ । रँजत केना अगल तकवीव मोष पड़ा जाग । ममिना रैठी सलसक मोठवी रँखि साम्ब चलि देनक । रेटावा केजुम झूह तकिते बहि गेल । मोटे नगल हमर तकवीव तँ जोक सभ स्फुरैठी केनक । करैरना कहाँ कियो भेल । अपणा जँ नीक मोटितौ, रँजितौ आ कबितौ तँ आग ७ दमा लै होगत । आरँ पचतेनासँ की ह्यत । समए तँ निकलि गेल । ठीके कहारत अछि रकता एले कहले आ रँवद एले रँहले । अपणा मोषकेँ सतोय देननि । μμ







मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“अहाँ रूते हएत तँ कक, दूदा रूँच तीवगव खेती होग छै पाषक । हँ, आमदनीओ नीक होग छै । कोला फर्मिनसँ नीक आमदनी होग छै । पाषक खेती कवर तँ कक हम पाषक रीखा देरै ।”

“की गुण छै से तँ कहऽ ।”

बाम अरताव राजन-

“खेती केना होगत अछि पाषक से सुनु । एकव शुक्रात दऽ रूँठ-रूँठ मसु सभ रँजे डना जे मसु अदेशिक नागपुवमे पाषक पत्राक खोज भेल, खोज केनिहार नागरसी सभ डना । ओकरा सरहक अगुआ छेलै गौरदू फमव जेकर पुजा अखला दूँगेव नगमे एकठाँ स्थान छै, ओतँ रँवग जातिक लोक रौरा धामक बसुमे जा कऽ पुजा-पाठ करैत अछि । रँवग जातिक दूँन-गोत्र नागरसीय अछि । पहिल एकव खेती रँवगये जातिष्ठी करै डन, दूदा अखनि सभ जातिक लोक करै छथि । पाषक आकाव दिन जकाँ होग छै से तँ देखिते छिथ । दु दिन मिननसँ जहिना दिन प्रसन्न होगत तहिना पाषमे दून, खएव, सुगारीक रंग थिली रँगा दूँहमे देनसँ दूँहक सुग्रीए रँदनि जाग छै । जखनि पाषक खेती शुरू कवर आ रँवेठा नगि जाएत तँ डन महिना धरि तँ आमदनी ले हएत, खाली खटे हएत । डन महिना पछाति आमदनी हूँच नगत ।”

“तूँ कहऽ ल हम मोष रँगा जेले छी । पाषक खेती कवरैष्ठी कवरै ।”

बाम अरताव-

“पहिल एकेकरुँठा खेती कवर ओकरा जेन पटिसठाँ रँस, ठाँठ रँसहजे खबरी, डाडजे खद, रँसक हण्ठी सात हाथक, सौँसे रँसक काहु फार्डा जेरै, पोडके रँती दम हाथक रँगा जेरै, यएह सभ समाण जेन तीठारना खेतकेँ तैयार कऽ निख । रीखा हम देरै कवरै । एक हाथक दूवीपव पाष रोपि देरै भऽ गेन । गाड नगनापव महिना दिन पछाति खेव छीष्टि कऽ डुपवसँ माँष्टि दऽ देरै ।”

“ठीक छै ।”

कहि राजे घवपव आरि पनी-सुशीयासँ बाय नऽ कऽ पाषक खेती करैक रिचव केनक । रिहाल भलसँ खेतोक जोगावमे नगि गेन । पाषक गाड नगि गेलै, बाम अरतावक मोतारिक माम दिनक पछाति खेव सेहो देनक, डरै मासक रँद आमदनीओ हूँच नगलै । सुशीसँ दूनु पवानी राजेक मस अकाम ठेक गेन ।

राजेकेँ तीसठाँ मिया-पुता दूष्ठी नडका, एकठाँ नडकी । जेठका दसमाये पठैत, छेठका तीसवाये, नडकीकेँ जगमगा एक मान भेल छेलै । जे राजेसव काहि तक रोग-रूता कवि कऽ गुजव-रँसव करै डन । मस हविदमा कनहनुमे पडन बहे छेलै, तेकरा हाथमे कपेखा एल आग मस रँदनि गेलै । कपड 1-नता, बहन-सहन, खेनाग-पिनाग सभ रँदनि गेलै ।

एक दिन राजेसव रँडैठामे काज करै डन । जनथे नऽ कऽ पनी आरि कहनथिन-

“आड जगथे कऽ निख ।”

राजेसव राजन-

“खमदूँ अरै छी । कनीए दूव कसियालेजे रँकी अछि ।”

आँतव नगा राजेसव जगथे कव नगन आ सुशीया पाष तोडए नगली । एक मोठवी पाष तोडि सुशीया घवपव आरि गेली आ राजे रँडैठेक काज करैत बहन । दूगहवमे घवपव आएन ।



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

दुपहरियामे रौजेसव पाष गोगढ क२ टोनी रँषा देनक । सुप्पीया गोढियाँन पाष पथियामे न२ रँक पहर नमभावपुव रँजाव रँटे जेन छनि गेनी । रौजेसव दूधहारि सामे वाम अरताव अँठाम अँएन । दूनु गोठे गग-सपु कवए नगन । रौजेसव वाम अरतावसँ पुढनक-

“ताय ले, लोक तँ पाष थागत अछि, खुँ थागत अछि । किड-किड कहक । की सब आला-आष गुा छै पाषक ।”

खुँसिँ उमकन रौजेसवक कष्टपँएन प्रमक तार बुँसि वाम अरताव रौजए नगन-

“गुा तँ एतेक छै जे मत पुडु । अषा गामे म्हारीव दस रँरीजी डना ओ आघरेदक रँड जेनी, रौमरँक शीतनहरिये हम सब जे पाषक नती हक दिए तेकवा म्हारीव दस रौमरँक-रौमरँक आषि ओकवा कष्ट क२ दरौग रँनरँ देनथिन । ओ कहथिन जे अँमे प्रदुव मात्रामे रिष्टासि पौन जाग छै, प्रष्टीण, रँसा, खनीज, कार्बोहायड्रेट, रिष्टासि सी.बी.ए., बागप्रौजन हाँसलोवस, पोष्टामियम, कैमियम, आयोडिन, तेल, उर्जा गत्यादि पौन जाग छै । तँ पाषक नती आषि क२ हम ओकवा दरौग रँषा नग छी । जेकव उपयोग हम सँस सँसुनी रिमाबीमे, पी.बी.मे, कड्डियतमे, पँष्टक किष्टासुबीमे, कोनवा रिमाबीमे रोगी सबकेँ दग छिए । यो तँ, एतेक गुा छै ।”

रौजेसव दूड ी डोनरँत रौजन-

“तरँ ले एकव एतेक महत छै ।”

वाम अरताव रौजन-

“पाष रँड कोमन-तनुक होगत अछि, एकवा ले अधिक रँवसात, ले अधिक गवमी, ले जोवगव हरा आ ले अधिक ठँडा चली । माल अधिक कोला टीज ले । सब समरूपे चली । देखे ले डुक रँड रँक रँषारँष्ट मकवा जान जकाँ रँषन अछि । कोला-ले-कोला काज नथजे बहत रँड रँमे ।”

“से तँ नीक छै जे कोला-ले-कोला काजमे उमवाएन बँह छी । कर्मे ले जिनगी छिँ । काज ले कक तँ हवमपाषा करैत बडु । एकठा पाष खुँआ दिअ आरँ सुप्पीओ रँजावसँ पाष रँटि क२ अँएन हत । ओकवा कि कम दौजनि होग छै । जनथे रँषा, दुपहरियाक भाषन क२ रँक पहर पाष न२ क२ नमभावपुव गेसाग आ रँचसाग । सामे उत तँ हँव बतुका भाषन कवत । एहेन घवरानी भगरष सबकेँ देखु । साझा नक्षी अछि ।”

पाष आ रौजेसव घवगव अँएन । तारँत सुप्पीया थाषा रँषा जेले छेनी । रौजेसवकेँ देखिते सुप्पीया रँजनी-

“एतेक वाति धरि केतए बँह छी । सरँले-सकान घवगव आरि जअरँ से ले ?”

रौजेसव रौजन-

“वाम अरताव दस नग गेन छेनी । पाषक गुा-अरगुा आ पाषक खेतीओक रौमे बुँसेले ।”

सुप्पीया पुढनथिन-

“सब गग कहनथि किले ?”

“हे पाषक खेती तँ पुँसितेनी खेती छेले । आरँ ले सब जातिक लोक कवए नगन । एकव खेतीसँ आमदनी तँ नीक अछि एकरँव नगेनाक रौद केतेक मान तक उपजा दैत बहत ।”





स्वप्नीया-

“से तँ नीक रात छै । सुलै छिए जे चाहो पत्नीक खेती अहिना होग छै झुदा पाँटे-साते मान तक होग छै । ओकरा रँखा-पातक डले ले होग छै झुदा पाणमे तँ से ले छै ।  
सुधवन तँ धेनु गाए ले तँ ठाँठ भेन पड़न बहत ।”

राजेश्वर-

“ठीके सुलैत छिए । ओव सुनु वाम अरतव कहनक, यो भाए अपणा अँठामक पाण दोसरो बाजाये जाग छै । एकरेव रँखावस गेन वही एकठा पाणक दोकाणपव पाण खागले गेलो तँ ओ दोकाणदाव, वा ठेकाण पढनक, जखनि वा ठेकाण कहनिए तखनि दोकाणदाव कहए नगन हज्जै रँडकी पौखरिक पाण अले छेलो, रँवमारै कठेविया आ मयी पाण जालो-मालो पौखरि महाव महक साँटी आ कमजोविया पाण नामी छेलै । हमरो आश्चर्य नगन ।”

स्वप्नीया रँजनी-

“एतेक दुर तक अपणा अँठामक पाण जाग छन ।”

राजेश्वर-

“है, हे ओव सुनु पहिलका जमाणमे रादशोह, जमीदाव सरहक अँठाम डानामे पाग, रन्व आ पाण द२ क२ कोलो काजक शुकशत करै छन । अपणा देखे ले छिए कोलो तबहक मागनीक काज हूअ रँखा पाणक होग छै । एहेन नीक फर्मनपव ग्रहण नगि गेलै । पहिल स्त्रीगण पाणक थिलीसँ झूहक ठोवक नानी बथे छेली । आग ले वंग-रँवगक निगिष्टिक सत आरि गेन हेल । साँट-रँहाडाँ आ पानासँ रँवग जातिकेँ लोकमान होग छै से तँ होगते छै सबकारोकेँ कबोड ाक घँषी नली छै । आरि सबकारो रँवग जातिपव रियाण देनक झुदा देल कि हएत पाणक खेती केनिहाव सत शिहव चलि जाग गेन । खानी रूँठ-सुछ्ठी अछि । के कवत पाणक खेती । अपणा जेठकारै ले देखे छिए दिनी जा क२ कोलो कम्पनीमे कम्पुँव चनरैए । कम्पनीरना सत शिख, गूँठका, वंग-रँवगक पाण ममाना सत रँजावमे भवि देल अछि । मिथिनाचनक पाण ले उँपठन जा बहन छै झुदा रँगानमे जनराग नीक बहन ओतके पाण अखनि सौँमे रँजावमे पसवन अछि । सएन सत रूँवेजे गेन छेलो । ओव केतए जाएर । भवि दिन तँ कोलो-ले-कोलो काज करिते वई डी सानुगहव कनी ठहनि नग डी ।”

स्वप्नीया रँजनी-

“होँ, खेलाग था निख । रिया-पुता था क२ सुति बहन ।”

राजेश्वर खेलाग था-पी क२ सुति बहन । स्वप्नीओ था क२ सुति बहनी । समेक चह रँदन । पछिना चारि-पाँट मानमे तेहेन ले पाणा खसन जे रँवग सतकेँ वीठ तोडाँ देनके । जडाँ सहित पाणक गाड सुख्खन भ२ गेलै । गाम-गामक रँवेठा ओहिना मोज पवए नगले । सतठी जराण-जूहाण सत दिनी-पँजार, रँवग-कनकता पड । गेन आ ओते लोकवी कवए नगन । मात्र रूँठ-रूँठ ग्वस सत गाममे बहि गेन । रँड-रँ उँपठल राजेश्वर माथा हाथ द२ सोगमे रँसन छन । स्वप्नीया भाषन कवि क२ पति नग आएन आ रँजन-

“एना माथा हाथ द२ रँसन काज हएत अकि अगिलो दिन दुनियाँक जेन सोचरँ ।”

असमाजसमे पड़न राजेश्वर रँजन-

“की कक से किड हूँडा ते ले अछि ।”

स्वप्नीया ताणा मालेत रँजनी-



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

‘हे ले मरद, एके दहावमे किदसि रँहाव । हमररँना टुछ ी पहिबि लिख आ घबमे रँस जाड ।  
सुनु हमरा गावामे हेसुनी अदहा किजोक अछि । तेकवा रँसकी नगा क२ पाणक कारोराव कक,  
कनकतासँ पाण आबु आ रँट्ट ।’

राजेकेँ हिन्नाति रँट्टले । राजे हेसुनी रँसकी नगा कपेखा न२ क२ कनकतासँ पाणक कारोराव शुब  
क२ देनक अपल सकरी मरुँणीमे पाण रँट्टे नगन आ सुपुगीया बनभावथुवमे । अदा मसमे कछे  
हविदम बहले करे जे केतए गामक बहस-सहस आ केतए शिहबक भाग-दोग । ले सुद्ध हरा ले  
समाजिकता आ ले ओ रँरहाव । गामक रँरहाव शिहबमे तकली ले भेठे डे । गाम तँ गामे डी । μμ

## मङ्गल दिवस

महाशय खगोल शीसुवरी गलेनियौ सारित क२ देनखिष जे पृथ्वी गोल अछि, सुर्ग स्थिर अछि । तैपव ७०० सयैक गमाङ्ग धरिना सत गिनि क२ हूणका हर्षसक सजा देनकनि । रूदा आग ससुर्ष दुनियाँ गलेनियोक दर्शनकेँ सह गनि बहन अछि । अतिघाटावक खुलसँ बैंगन एक मङ्गल तँ रहए दिन छी । मङ्गलदुरेक खुलसँ बैंगन सँडा आ केतेक भय-रहिन, सब-ससुर्षनी, माए-रौपक शहीदक प्रतीक अछि । सायाज्यरानी आ पुञ्जीपतिकेँ विरोधक प्रतीक अछि । सायारादक चेह छी । एक मङ्गल उलस सए नद्वैकेँ मङ्गलदुर दिवस केना मना न जए तैकले तैगारी भ२ बहन छन । पार्टी अहिंसमे कामरेडक तीरसँ पएव बथैक जगह ले । एकठौ हड्ढाकेँ उमोह सरहक मणकेँ सकमोडा क२ बहन छेलै । एकएक एकठौ घण्टा घण्टन । हमर जे रौरी छना मूँ सञ्जापव, हूणक देहारसाष भ२ गेननि । ग्री सगाटाव सौँमे पार्टीपक रीट पसरि गेन । हमरा सतमे एकठौ घरकेँ उमंग जगि गेन । तखल सर ससुर्षतिसँ तँए भेलै-

“हम सत मङ्गल दिवस एाप्रि दिवसकेँ कपमे मसारी । कठिरानी, मसुरानी, खौलरानी रिटाव धावाकेँ तोडा नर ससुर्षमे समाजक रीटमे दिए ।”

सएह भेल । रौरीक सकार पहुनके वीति-विराजक अशुकुन भेलनि । तेवागत दिन जाति आ पवजातिक रैसाव केना । रैसावमे ठाठ भ२ रैजना ।

“रौरीक सवाधमे हम पुवहित-पात्रकेँ ले आसर । अगल स्रजातिसँ जे जेना हेते कर्म कवासर ।”

गौआँमे खनरनी मटि गेन । हएव रैजलौ एगावह गाम न२ क२ पुडी-जिलेरी, खजा-नडुक भोज करै । जाति-पवजाति, पवहित-पात्र आ दान सतकेँ रूँमु जेना आगि नगि गेलै । पार्टीमे रूँतु दिनसँ ए सरहक मादे टर्टा होग जे ग्री सत ग्रीग छी एकव रहियकाव कएन जए । सवि योन-हटकाक रौद सर ससुर्षतिसँ तँग भ२ गेन ।

“माए-रौपक सवाध कर्म जेना योन हूए तेना कक ।”

हम रैजलौ-

“सौ भाव-रैगू लोकनि ग्री शीरीयो तँ पाँटौ तनुसँ रैगन अछि । माँट, पानि, हरा, आगि आ अकामसँ । मुगना पड्याति हएव ग्री शीरीय ओही पाँटौ तनुमे रिनिष भ२ जाग छै । आयेकेँ मूँ ले होग छै । कर्मक अशुसाव कोला-ल-कोला जीरमे जगम होग छै । तखनि केतए स्रसा आ नवक छै । के सत देखल छिए, आकि किनकव माता-पिता कहिले एना जे हमरा कष्ट अछि आकि सुख । रौजू ल । हमर रौरी कर्म ले छना, माधु गिजाजकेँ छना । केकवो नीके केनखिष तँए हमरो रिसवास अछि, जे केतो स्रसा छै तँ हमरो रौरीकेँ स्रसा भेठरेँ कवितनि । भोज-भात कएन दग छी, अहाँक जिदपव अगला स्रजातिसँ कर्म सेना भ२ जेतनि ।”

हमर रौत सुनिते घोषा ज हूँ नगन । हएव कहनिए-

“खौलनी, तेनी, यादर, रूसरव, चमाव, धासुक, कियोठमे स्रजाजातिये पुवहित-पात्र होग छै । अगला जातिये भेनासँ की हर्ज, से कछ ।”

सएह भेलै । हमर भोज-भातक ओवियानमे नगि गेलौ । गाममे जेना आगि सुनगि गेन । जहिना ककवक नागविपव मष्टिया तेन पड्या ते दोग एमहव तँ दोग ओमहव कवए नलैछ छै तहिना ब्रुटा सत कवए नगन । जगदीशे प्रसाद मडनक लहनुमे कयुगिष्ट, पार्टीक ससुर्ष चलि बहन छन । नमावपुवक



जमीन्दार नक्कीकाब्रु, बासा काब्रुक जमीन रैबामे नगभग पचास रीया। जमीनपव रैठेदारी द्दकदमा कएन गेन डन। गाम दु भागमे रैँष्टि गेन। प्रद्वख जमीन्दारक र्ग दर्ग डेनखिन। तखल ग्ग घष्टणा घष्टित भेन डन। प्रद्वख किछु जाति सभकेँ सनका क२ भोज रिगाडक चेष्टा केना द्दमा चनवनि किछु ले। पाँसी सदस्य डन एक सए पचासक नगभग। एगाबहो गामक स्रजाति सभ जातिक पाँसी सदस्यक र्ग भोज भेन, एगाबहो गाममे जे महा दरिद्र (भिखंगा) केँ अनगसँ प्कखक दखे धोती, गंजी, गमडा आ श्रीगण सभकेँ साड ी, साया, रूँजोऊ र्ग भोज खूआ सभन केरौ। कानीकाब्रु मा आसाममे डी.आ.ग.जी. डना सेरा निवृत भेना पढाति डुँहो आएन डना। हुँका र्ग नागन पाँट गोठे महापात्र सेनो डेनखिन। कानी रौरू अगल सयृतक रिद्वान। रैबामे हुँकामँ कियो कर्म कास्तक रौबेमे पुडि देनखिन उ कहनखिन-

“स्यो रौरू, जे जेतेक चरुकाव, जे जेतेक घुसखोव, जे जेतेक रैंगामन, माल दु नय्वी कमागरना उ सभ किए ले खुरै नमहव-नमहव रतन-रौसन, कगड 1-नता, ठैरुन-गर्ग आ रौन्डा-गाए दान कवत। जेनिहव रैजावमे जा क२ रैँटि जेत। दान उँ उकरे दिए जे उग रनुकेँ उगयोग क२ सकए। कर्म कास्त सभ जे कहि बहन डधि मग गठनु अडि। स्रसा-नवक एते छे। डुँपव केतए तके छिए।”

एते रात सुनिते र्ग नागन पाँटो र्गी हिनका डोर्डा क२ घब दिस रिद्व भ२ गेना। आ रैँजेत बहखिन-

“कहूँ! अगल पएवमे फबहनि मारे डधि। अगल ले उँच पदपव डधि। हमरा लोकनिकेँ उँ रोजी-रोठी सएह डी जेपव नात मारे डधि। हुँका उँ पेशनेला मारे बाम भेठे डनहि।”

“हमव रौतपव उँ पौगा-पडित सभ जेन खौँचाह हेरै कवतनि।”

कानी रौरू कहनखिन।

पुनः रौजए नगनखिन-

“स्यो भाव-रैंगू लोकनि, रूमणा जागत अडि पुँवोहित-पात्र लोकनि सीधे स्रसाँ कनकर्म ईकठे न२ क२ आएन डधि आ मृतककेँ सीधे स्रसा पठा देखिन।”

ग्ग घष्टणा सभ जखनि प्रद्वखकेँ पता नगननि उँ रिदेसुव ठाँव लोआकेँ रैनजोवरी महिस थोनि जेनक। अलक तबहक द्दकदमामे कामलेड सभकेँ फँसर२ नगन। रिवासी किता द्दकदमा आदि देनक। एकठी-ल-एकठी कोमलेड हविदमा जेनमे बँहत बहनि। लोकक मग पीता गेलै। जहिना शान्तिक रौद रैँरुचव अरै छे तहिना एक दिन प्रद्वख सभ समागकेँ तत् मारि नगननि जे बाणी ले मविहेँ जे हेव कोला आन्दानपव फठावाघात कवता। मग्ग दिस अखला कोला-ल-कोला कपे एक मग्गकेँ मलोन जागत अडि। हमरा लोकनिकेँ चाहे जग तबहक खतवा हुँअ, खुँसँ रंगन नाग नडाक सहावा न२ क२ काजकेँ सफल रैँवारी। ले कि तूँ कमा आ हमरा खूआ हमव स्रसा एते आ तोहव स्रसा द्दगना पढाति! सरसनातिसँ निपीए भेन-

“ठौंगी सरहक हफड मँ सतर्क बही।”µµ

तुख

रित भरिक श्पेठ जे ल कवए । करे-करे श्पेठ आ डुरे-डुरे खेत, तहिना मलोकै तुख रँदने ज्ञाग छै । रीम भेन तँ चामक जोगाव, कोठनीसँ कोठाक जोगाव, मागकिन भेन तँ मोठेव मागकिनक जोगाव, मोठेव मागकिन भेन तँ स्कावणीोक जोगाव, काहि ज्ञा क२ हराय ज्ञाजक जोगाव । माले ज्ञा जोगाव कथला ककरोक कोला नामे ल लेत । ज्ञग कावणे टोरी-डकेती, रेतिटाव, अगहवण, एसमा-गर्निग रँदने ज्ञागत अछि । श्त्रुषण रौरु श्पेय ज्ञमीणदाव दु भाँगक भेगारी । नगतग टावि सए पाटम रीया जोता ज्ञमीण छेननि । तीण रीयामे रीम आ दम रीयामे कनम-गाछी । तीणठी श्पोखनि । श्पोखनिमे रीग-रिंरिगक मालु । टोधवा मकान रीगना ज्ञकाँ दनाण । दमठी लोकर-टाकर, मशी देराण, अहमगुआ सेहो दु-टाविठी वखल डना । आँगणमे तीणठी स्त्रीणक लोकराणी । मिला ज्ञुना क२ ठाँठ-राँठ तेहेण । बाजा महाराजा ज्ञकाँ छोँठे भाँगक भाँठे छन अमवजी । अमवजी सीमणव ह्योजक डाकठेव । हुनका दुठी नडका । गमहव श्त्रुषण रौरुकै दुठी नडका आ दुठी नडकी । एकठी नडका डाकठेव दवठंगा अस्पतानमे । दोसव गञ्जीमियव अहमदारादक सबकारी काजमे । अगल श्त्रुषण रौरु घव पवहक काज देखि ते छथि । कोला परिवाराक खेत जँ हिनका खेतक आरु मे आरु रीचमे पडैत तँ रँनजोवी दहनि पछाति गुणा-शोणा दाममे न२ नथि । केकरो अल द२ क२ केकरो, रेँठी रिखाहमे कर्जा द२ क२, केकरो माँ-रीणक सवाधमे कर्जा द२ द२ सुदि-दव-सुदि ज्ञमीण रँछेलेत वहना । गाममे गरीरौ-गुवरीक कमी ले । जेते धनीक वहत ओते ल गरीरीओ रँदँत ज्ञाग छै । केतेक की हुअ तैकव कोला सीमे सबहद ले । जोतीओ एक नरँवक । अलको नीकल रमत्त हमारे त२ ज्ञाए । अजुर रौरु सेहो ज्ञमीणदाव । हुनका एकठी नडका महारीव । ज्ञथनि अजुर रौरु मवि गेना तँ सत कारोरीव महारीवक देख-लेखमे चनए नगन । जेहल भाँठे महारीव तेहेल कवरौ करैत । तुखन-दुखनकेँ भोजन करौणग, जेकवा ज्ञग टिजक दिकत होग मे जँ महारीवसँ माँले तँ ओकर आरुणिकताक पुँति अरँसम क२ दैत । मिला-ज्ञुना क२ माधु प्रपुतक महारीव । जोतक नामो-निशान ले । एक दिन महारीवक मनमे एले जे तीण गोठेकेँ आश्रामे एतेक सपुति न२ क२ की कवरै, से ले तँ गरीरै, भूमिणकेँ, अगल रेँकती जे मागत तेकरा देरै । सए केनक । जे अरै केकरो पाँचकठ्ठा, केकरो रीया तँ केकरो दम कष्टी, देरँ नगन । श्त्रुषण रौरु ज्ञ राँत रँमननि । जोती तँ डनाहे पँट गेना महारीव रौरु नग । श्त्रुषण रौरु कहनथिन-

“शो महारीव रौरु, सुले छी ज्ञमीण दाण करै छी । हमरो देन ज्ञाँड पोडके ज्ञमीण ।”

महारीव अडुँ चोनरैत कहनकनि-

“अहाँ काहि अएरै जे माँगर द२ देरै ।”

“शुक छै ।”

कहि श्त्रुषण रौरु अगला घवणव आरि गेना । ए रिदुटेमे महारीव रौरु, श्त्रुषण रौरुक रीनेमे पुवा ज्ञाणकारी न२ जेननि । रिहाण भले ज्ञथनि श्त्रुषण रौरु एना तथनि महारीव कहनकनि-

“शुक छै अहाँकेँ जेतेक टाली से हम देरै अद एक श्तिणव ।”

श्त्रुषण पुडनथिन-

“कोल श्ति ?”

“श्ति यए जे काहि छह रँजे तिनसवसँ न२ क२ साँस छह रँजे तकमे जेतेक दुव अहाँ दोग क२ येरि जेरै ओ ज्ञमीण अहाँक छी ।”



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जोती शत्रुधर शर्मा मासि जेना । विहास भेल महावीर अणन एकठा सिगालीक हाथमे रसिक खोज  
खुशी दइ कहलक-

“हिनका संगे जा आ जेतएसँ अ दोगनाग शुक कवता तेतएसँ नइ कइ जेतक जमीनकेँ अणन  
पएसँ घेलेत गुता खुशी गारेत जगहइ ।”

डह रजे सँममे शुक केनहा सुनपव गुता हव घुमि आरथि । डह रजे तिसवसँ जे शत्रुधर  
राँवु दोगु नगना । खेत घेवनथि, आमक रंगान घेवनथि, पोथवि घेवनथि, मोठगव देह दोलीत-  
दोलीत थकि गेना । जेतअ-केतो ककथि तँ सिगाली कहनि-

“मानिक जन्दी कक । हुनक रंगान घेक । अ मदिबरना रीस रीघरा कोनाकेँ घेक !”

तो-तो शत्रुधर राँवु दोलीत-दोलीत सिदिनि सुन नग अरैत-अरैत धवामसँ खसना । तखल  
सिगाली राजन-

“भइ गेन आर ।”

शत्रुधर राँवुकेँ हेशि केतए । हुनका तँ प्राण-पेथक उर्छा गेननि सिविह साठे तीन हाथक ठठव  
जगह छेकल । महावीर जखनि एना तँ रजना-

“देथियन्न जोतीकेँ । हिनका सिविह सावहे तीन हाथ जमीन चाही । रेंकारे ल तिसवसँ सँम  
धवि अपसियाँत जेना ।”

सुनु यो भाए लोकनि, सतोयसँ बद्ध मनमे सतोय बाखु । जेतरे अडि तेतरेसँ सतोय कक ।  
सुखी बहर । तँ कहरौ छै सतोयसँ पवम सुखम् । ॥

रैखा

मनुष्याह हाशुणक जूखानीपव डेले । कठगुमावी उकठाह मस टैतके श्रुत आगमन भ२ बहन डेले । महाकाव्रु टोकीपव रैसन मल-मल किडु मोटि बहन डना । मोचता कि अगल दिस-अदिसक रियममे मोटे डना । आग-काहिक लोक जूखान-जहान सभ, एना किए भ२ गेलै हेल । केकरासँ जेना कोला मतनरै लै होग । जूखान-जहान अगल धूमिमे रैहान । माए-बाप मरै आकि जारै कोला चिडु लै । गुन-धुन कबिते डना तखल पनी-सुजोचना एक कप चाह आ थोडके रियुष्ट लल एनी । तिनसुबका पहव डन । महाकाव्रु चाहो पीरिथि आ तगपले मोल किडु मोटिते बथि । देहवाके निगुहारीत सुजोचना पुढनकनि-

“मोण खसन किए अडि । कथी गुन-धुन करै डी ? ”

“लै किडु, किडु लै । ” महाकाव्रु कहनथि ।

तेयो दूह नष्टकले बहनि । सुजोचना हेल पुढनकनि-

“हमवा नीका होगत अडि, कोला-ल-कोला रात अरिस भेल हेल । या लै तँ रिसावीक कोला नम्रणी रूमना जागत अडि । रोजू ल । ”

किडु मोटेत महाकाव्रु रैजना-

“जँ पुठै डी तँ कहै डी । हम पनबहे रैथक बही तहिए माए-बाबू मरि गेना । पिती वामअधिन अहाँ मंग हमर रिखाह क२ देननि । तैगारीमे अमगले डेलौ । रैहिन लै डन । पितीएक देख-लेखमे सभ काज-धमन चले डन । आरँ तँ बियो-पुतो भेल । बाबूक अमनदारीमे एक रीघा खेत डन । अथनि दम रीघा खेत अडि । एकठाँ महिस डन, दूठाँ गध डन, जोवा भवि रैबद डन तेकले रैदोनत ल दम रीघा खेत अबजलौ । बिया-पुतारै पडरौ केलौ । कन्याणी रैठीके नीक दम दहेजक मंग रिखाहो केलौ । तीनु रैठी पडरौ -निख क२ जेठका रैठी-महेन्द्र दिगीमे, ममिना बितेने मद्राममे आ जेठका दिगीमे जागपुवमे लाकवी करैत अडि । जेठका महेन्द्र जखनि आगे. ये डन तखल ओकव रिखाह क२ देनि । ममिना मद्राममे कोला नमिसँ रिखाह कहाँ दिस क२ जेनक । जेठका दिगीमे सेहो कहाँ दिस ओत रिखाह क२ जेनक । दूनु जेठका । खरिबिओ लै देनक ! सएह सभ मोटे डी । अडूके सभ रूमलौ अडि । ”

सुजोचना कहनकनि-

“अहीले मल अघोब अडि । एकव चिन्ता जोडू । नाँउ चाह पीअन भेल ? ”

रैचनान एक जोष्ट चाह पीरँ खानी कप सुजोचनाक हाथमे दैत महाकाव्रु रैजना-

“ओकव चिन्ता तँ अडिए दूदा अधिक चिन्ता अ अडि जे अगला सरहक जिगगीक की हएत । आरँ तँ हमरो उमेव सार्थि रैथिसँ उंगले भेल हएत । अडूक उमेव पचपन-डुपपन रैबथ भेले हएत । केना क२ दिस कठत । जारै पेरुख डन तारै देह धूमि खुरँ खेरौ कवी आ खुरँ काज करै डेलौ । दम रीघा खेतो अबजलौ आ अथनि भोगनिहार कियो लै ! ”

सुजोचना कहनकनि-

“से तँ ठीके कहै डी । देखियो ल जोडू । सरहक अगवजिद । चिठ्ठीओ-पत्री लै दगे । आरँ तँ मोरौगन हाग आरि गेल । तदुसँ कोला गप-सग लै । जोडू । सरहक जेन रैषमन ।





मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सएह तँ कखला कान हमरुँ सोटे छी केहेन निदर्द भ२ गेल । अरुँकेँ दया रिगारी आ हमरा रातबस तरौह केले बहेत अछि । ”

“सएह सभ सोटे छेजौं जे कखले पढ़जौं । सभ्ठा खेत रैठांग नगन अछि । उंगजाक कोला ठेकास ले । ”

माएक माता जगने-

“होड, खाड-पिरु भगरास केतो गाम गेलखिन अछि । रैठा धन छी, केतो बह२ नीके-ना बह२ । अगस गुजब-रसब तँ कबिते अछि ल । अगले एतेक चिन्ता जूनि कब । ”

“ग्रीक छे जनथे लेल आड । ”

सुलोचना थोडके कानक रौद सोहारी आ दुध लेल एनी । महाकाब्रु जनथे था क२ सुति बहना । जेठका रैठा महेंद्र दिनीसँ परिवारक रंग रैठा अतिथेक रैठा मानतीक रंग गाम आएन । अरिंते देवी दुखावपव पिता-महाकाब्रुकेँ गोड नगनकनि । रियो-पुतेकेँ गोड नलीक गरीवा केनक । रैठा अतिथेक रोजन-

“गनी हे दादाजी, नमस्तु दादाजी । ”

रैठा मानतीओ राजन-

“नमस्तु दादाजी । ”

पुतेहु कन्याणी सेहो पएव दुग क२ गोव नगननि । सभतुव अंगस जाग गेल । अंगलामे महेंद्र आ कन्याणी माए-सुलोचनाकेँ पएव दुग क२ गोड नगननि । दूदा अतिथेक आ मानती नमस्तु-नमस्तु कहि टोकीपव रैस जाग गेल । जेना कोला खाना पुति केले हूअ । कोला तबहेँ पाँट-सात दिन बहन पाँटे-सात दिनमे होगत बहे जे कोन जंगन आकि पीजडामे हँसि गेलौं । दान-पगहा तोडा कखनि भाषि जाग । अतिथेक रोजेत-

“दादाजी का दरबंरु गंध कबता हे । दादाजी हमेसा ठौं-ठौं कबते बहते हो । जहाँ मोते हो रनी कफ-थुक फेक देते हो । किसी तबह का त्रास नही हे । जन्दी दिनी टगिए ले पापा । ”

रैठा मानतीओक तेहले भाया । हे, पुतेहु आ रैठा महेंद्र रोजेत तँ किछु ले दूदा तले-तब मस अघोव छेले, जेना घोरिक घेन हवा देले होग माए-रौप । कोला तबहेँ सात दिन गाममे बहन आठम दिन पितरुँ जा क२ महेंद्र कहननि-

“रौरुजी, हम सभ दिनी जाग छी । ”

अ गप सुनिते महाकाब्रुकेँ जेना टोह आरि गेलनि । रोजना-

“एतले दिन ले आएन छेनह । कहियो कोला रुशेला-छेम ले पुठे छह, की रात छिए । जेहले तँ तेहले वितेने आ दिलेने भेन । जेकब जेठकी दुनाहि तेकब छेठकी भरे नगन थाग । माएओ-रौप अछि तेकब कहियो कोला थोजो-खरि नग छहक । सपलामे ले देखे छहक माए-रौपकेँ । की कहर२ तोवा सभकेँ । जाग छह तँ जा । ”

महेंद्र रोजन-

“बितेने आ दिलेने हुंनो सभ ले कोला थोज-खरि नगए ! ”

“तीनु तँ एके चपी-रैठीक भ२ गेल । ”





मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

एतेक स्रमिते महेश्वर ताँमे आरि कहनकनि-

“एतेक जमीन-जखा अछि तेँगसँ गुजब-रँसव लेँ जागए । लोकव आँ लोकवाणी बधि लिख ।”

आँ कहि महेश्वर रिदाँ तँ गेन दिगी । महाकाव्य दुपेँ बहना । कवता की । स्रजोचना पतियेपव जेवसँ रँजनी-

“की कवलेँ जँरँसल रँदनि गेन लेन । आरँक लोक पति-पत्नी आँ पिया-पुताकेँ मात्र परिवार बुँनेत अछि । जोड़ू आँ माया जानकेँ । केना-केना कँ पढलेँ जेँ बुँठ ाड़िये सहते कवत अहँवक नाँगी जकाँ । ह्रदा हिनका लोकनि लेन बैसम । सत अँपल-अँपल कर्म-धर्म जँरँत अछि । नीक डाकँकसँ दराँग-दाक कवाँड । जेँ हेरँक हेतेँ सेँ देखन जेतेँ ।”

महाकाव्यकेँ आँथिसँ लाव खसए नगनि । स्रजोचनाकेँ कहनथिन-

“हे, गाममे जेँ कमानाकाव्य अछि तेकवाँ देखेँ छिँए तँ किछु लेँ हूँड ागत अछि । कमानाकाव्यकेँ चाँबि गोँ रँष्टी छै । चाक रँष्टी गाममे बँह छै । जेँठका डाकँक छै । समिना खेती-राँड ि सँभारै छै । समिना धनकँष्टया मशीन चनलेँ छै । जोँठका दराँग दोकान करै छै । सत तुँव चिनि कँ बँह जाँगए । दसगोँ पिया-पुतो छै केहेन चिनाणी छै तेँयाबीये । माँए-रँपकेँ पिया-पुता तवहँथीपव बखल छै । गाममे प्रतियाँ छै । तीरँषी जवनी गाँए गेसले अछि । ठाँसँ गुजब करैत अछि ।”

स्रजोचना रँजनी-

“सएह देखि कँ तँ हमरो डुगुगता नलेँए । हमरा रँष्टी सतकेँ तँ योँगी सत नून छँटौ देल छै ।”

महाकाव्य अँपल आँथिक लाव पौछित रँजना-

“एँमे हमरो गनती अछि । रँरहाँक लेन कहियो लेँ देनिँए । सत दिन सँपल देखेत बहलेँ जेँ रँथी सत हाँकिम रँगत तँ हमरो सतकेँ प्रतियाँ भेँष्टत । भेँन उँठेँ । मोह डुन आँथिव रँष्टी छी ले । ह्रदा आँर लेँ मोह होँगए गाममे रँसाव करी आँ तेहँ काँज कँ दिँए जेँ सतकेँ सुँख हँएत आँ हमरो अँहाँकेँ जेँ-जेँ रँथी सत अछि सेँ दुँव तँ जँएत ।”

सएह केननि । बरँ दिन कुँनपव गामक प्रतियँठित लोक सतकेँ आँ मुँथिया-सवर्गचक रँसाव केननि । रँसावमे महाकाव्य रँजना-

“हम दुँव पवानी रँष्टी पुँतोहूसँ तँग तँ गेन छी । ओ सत आँर गाममे लेँ बहत । किँएक तँ सत अँपल-अँपल घबराँकीक रँग घब रँना-रँना दिगी मदाँस जाँयपुँवमे बहँ नगन । रँष्टी पुँतोहूँ कियो हमरा सतकेँ देखेरँना ले । तँए, हम अँपल सँपति सारँजनीक कँ बहन छी अँहाँ सँरँहक जेँ रिँटाव हूँअ कँएन जाँड ।”

ह्रथियाँजीकेँ रिँटाव लेननि, हाँग कुँन खोनन जाँए । सवर्गचक रिँटाव लेननि, अँस्पतान खोनन जाँए । तँहियाँ कियो कहनि जेँ मँदिँव रँनाँएन जाँए । तँ कियो कहनि, काँलेँज खोनन जाँए । सतकेँ सत तवहँक रिँटाव । अँतमे, ह्रथियाँजी महाकाव्यपव जोँडि पुँडनथिन-

“अँहाँकेँ अँपल रिँटाव की अछि सेँ रँजू ?”

महाकाव्य रँजना-



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“हमवा सभ गति समाजमे रहूतो गोठेकेँ होगत हेतनि । केतेक गवीर दरांग रिषा मवेत हएत । केतेक पथक रिषा । तँ हमर रिचाव अछि जे बृह्मा अश्रिम सह अस्पतान दुनु संगे खोनन जाए ।”

खोगड़ी पढ़ए नगन ।

उत्साहित भ२ महाकाव्त् रिच्छेमे रँजना-

“सुले जाऊ, तीठामे दु रीया दम कर्हूक एकठा कोना अछि, ओते अ सँझा खोनन जाए ।

तारैत एक नाथ कपेखा थोलेले दग छी । अहाँ सभ देहसँ आ बृहिसँ मदत दियो ।”

गवीर आ बृह्म सभ जखनि अ समाचाव स्रनक तँ खूमीक ठेकाषा ले बहले । सभ महाकाव्त् आ स्रजोचनारकेँ धन्य कहए नगन । रिहण लेल काज शुक भ२ गेन । कियो राँस काँठेत तँ कियो देरौन जोड़ेत तलिा कियो जाफुडी रँगलेत । बृठ सभ डोवीए राँठेत । सभ अगषा-अगषा रैभरक अश्रुकप काज कए नगन । खुरँ नमहव एकठा रोड महाकाव्त् स्रजोचना बृह्मा अश्रिम सह अस्पतानक नगोन गेन । माम दिममे घब तैयाव भ२ गेन । गामेक एकठा मलीक डाकठव दवडंगा मेडिकनमे डना ओ सगताहमे दु दिष अली अस्पतानमे योगदान देरौक मल रँलननि । गामेगा डाकठव मेहो दु दिषक समए ओते निशुनक देरँए नगना । महाकाव्त् आ स्रजोचनारकेँ जे मलक रँखा छेननि से अश्रिमगव अरिंते अश्रिम खूमीक लोव रँहए नगननि । मलमे एकठा तारना जगननि हम सरँहक छी सभ हमर छी । μμ



## किमाषक गुञ्जा

मंगल भोले धाष कष्टए जेन से दुगहबियामे घबषव आएन । घबषव अरिंते लोदेनहा धाषक दोशी जेन खोह छिष्ट तैयारीमे मोसतेज भ२ जेन ।

जहिला सबकाव जेन मार्ट महिला हिमरँ-कितार आ आमद-खटक होग छै तहिला रँमिया जेन दिरानी, पंडित-गुरोहित जेन यत्र आ दुर्गापुजा तहिला गृहसूतक जेन अगहन होगए । खष धाष काष्टू तँ खष धाष तैयार कक, खष गहूमक खेत जोत-कोव कक तँ खष गाए-महिस-रँवदकेँ साली-रुष्टी नगाँ । छष तबहक काज बहल मंगल पलेसाव बहे छन ।

सामू पहव मंगल जोगिषदवक उगठाम आ गि तपेले जेन । गष-सगष छनए नगले । मंगल रौज्ज-रौज्ज-

“हो जोगिषदव भाय, गष-सगष कि कवरँ, काजे तेतेक अछि जे पलेसाव-पलेसाव बहे छी । सबो हिलेक हूबसति ले बहेत अछि । तहुमे अगहन मस ।”

जोगिषदव रौज्ज-

“एतेक पलेसाव होगक कोष काज छै, आरँ तँ धाष खेतक जोतागसँ न२ क२ दोशी तकक जेन खेसव, छेकठव, गहूम रौगु करेले मशीन आरिं जेले आरो छष तबहक मशीन सभ भ२ जेलेहे । तँए पलेसाव हेरौक कोसा जकवत ले छै । एकठी कहरौ छै जे, जे पुत पवदेशी जेन देर पितव सभसँ जेन । से ले ल कवए दियागसँ काज लेह आ सभ दिमि बजवि बाखह ।”

मंगल रौज्ज-

“से तँ ठीके कहे छहक । एकठी पलेसाव बहए तरँ ले । न२ द२ क२ एकठी रँठी अछि सेहो अरुड भ२ जेन अछि । केतसा कहे छिष्ट जे मष नगा क२ पठ-मिथि जे दु अरुवक रौध हेतो तँ अगल काज देतो से कविते ले अछि । एकठी मोरौगन कीमि जेनकहेँ आ हविद्या गीत-नादक पाछाँ अपमियात बहेए । की कहरँ गहूमक रिखा ५० किलो एकठी कोठीमे बखल बही से की केनक तँ कथमि-ल-कथमि सभठी रीखा रँटि जेनक आ एकठी मोरौगन कीमि आनक । तुही कहए आरँ खेती केषा कवरँ । छोड । रँदाम भ२ जेन ।”

जोगिषदव रौज्ज-

“अ तँ रँड खवरँ काज भेले । जखमि पुञ्जाए टोवा क२ रँटि जेत तँ कोसा परिवारकेँ गजब-रसव आरिं उल्लति केषा हेते । एक कोठी अगज तँ पुञ्जा ले ल होगत छै, पुञ्जा तँ रीखाक जेन जे बाखन जाग छै सख ल होगत छै । जगसँ अरिंक उगजा आरिं आमदनी हेधत सख ल पुञ्जा जेन । जँ पुञ्जा कियो था जेन तँ सभठी रसतु था जेन ।”

मंगल खेती मारैत आगु रौज्ज-

“एक तँ लोदीक मारन छी दु रीघामे धाष छन, उगवका खेतक धाष तँ मारन जेन, मिचना खेतक धाष किछु जेन । तैगवसँ छोड । रीए रँट जेनक । आरँ रीखा खरिदु कि थाव खरिदु कि खेत जोताँ । अही सरँहक मोचमे पडन छी ।”

जोगिषदव कहनके-



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

“येव पनेशोन हेरौक जकवत ले छै । एकठा कहरी छै जे टिन्तानँ चतुवाग घटे शोकसँ घटे शीवीव, पापसँ लफ्फुमी घटे कह गये दाम करीव । तँए हमरा नगमे गहूमक रीखा अछि शोककेँ मान उन्नति किममक रीखासँ खेती केल छेलौं । एक मान तकमे रीखा ले ल खवाप होग छै । तँए जे रीखाक जकवत हेतह से हम द२ देरह । जँ अपना नग ले ठाका हूअ तँ हम कहरैए जे उन्नति किमिमक रीखासँ खेती कवह । खेतमे जँ हान ले होग तँ गष्ठा क२ खेती करिह२ । ले तँ धालाक खेती मारन गोन आ गहूमोक चलि जेतह । एकठा रीत कह२ जे तवकावी-हवकावीओ सरहक खेती केल छह किल ? ”

“हँ हो भाय, तवकावीमे अन्न, दूरो आ हवकावीमे कोरी, भाष्ठा, ठमाठबो सरहक खेती केल छी । ”

जोगिन्दर-

“से तँ नीक रीत छह, ले तँ ए रेंवका मल खवारँ समेमे लोक रौखागँ क२ ल मवेत । किमानक तँ यएह सब ल पूजा होगत छै । समए-मान, आगाँ-पाडाँ देखि क२ खेती-राडी कवक चाली । जगसँ कथला दूह मलीन ले हएत । तँए... । कहरीओ छै मल हवथित तँ गारी गीत । ”॥

## डुआ-डुत

दुर्गापूजाक समय बहए। सब अंगण-अंगण उमंगमे मस्त छन। सब कियो घर-घर परिवारमे मज्जन छन। कियो पूजामे मस्त तँ कियो नाच देखेमे मस्त, कियो दाक पीरमे मस्त। तहिना कियो सृष्टिक आगुमे नखी-रिवती कइ देखेमे मस्त, कियो फुमारी भोजन कबरेमे रेंसु। कियो ब्राह्मण भोजनमे मस्त। एक-एकठा फुमारी आ ब्राह्मण पट-पट गोठेक लात खागले तैयाव छन। तखन शंभु मंडन नहु नइ कइ भगवतीकेँ चढ़ौने गेन। ओकरा मंदिरक भीतव जागसँ पंडितजी बोकेत कहनिथि-

“सोनकन सब भगवतीकेँ अंगण हाथे नहु लै चढ़। सकै छै आ ल प्रणाम कइ सकै छै।”

एँ रातपव पोड़रे कान हवा-गुवा सेहो भेन। अतमे हैसना भेन जे पुजेगरी आ पुबहित जोड़ि कियो भीतव लै जा सकैत अछि। चाहे कोणा जातिक बहए। एहेन हैसनाक अख्य कावण छन एक रिचबिया पट।

जखनि टोकपव एहो तँ एकठा दोसरे शर्क पसवन छन। एकठा डोम चाहक दोकाणपव रौटपव रैस कइ चाह पीरैले तैयाव छन दोकाणदाव बोकि बहन छेले। अन्तमे रैनजोरी ओ रौटपव रैस गेन आ दोकाणदावसँ सरान पुढनक-

“हम हिन्दू छी आकि लै छी। जखनि सब जाति क अहाँ आगठ पोग छी तँ हमर आगठ किए लै पुअर। एक तँ अहाँ रँराजी छी, कँठी रँरुलै छी तखनि अहाँ सरहक आगठ पोग छी से पोगाग जोड़ि दियो आ से लै तँ रँराजीरना आडयव जोड़ि दियो।”

तीनु प्रम रिचवणीय छेले। सुनिते हम सोचमे पड़ि गेलौ। μμ

कनिहगक निर्णय

सतहग-ब्रेता रीत गेन डन । द्वापक समथ पुरा भ२ गेन डेलै । कनिहगक थरैने होअएँना डेलै । कनिहग अणन बाज-पाँठ चनरैने मोटि बहन डन । रिच्छेमे तीनु हगक देरता सत कनिहग नग आरि हाथ जोडा ठाढ़ भ२ गेना आ कनिहगो हाथ जोडा ठाढ़ भेन । जखनि रिचाव-रिमर्षि शुक भेलै तँ तीनु हगक देरता सत कहनखि-

“हम सत तँ कहूना तीनु हगक बाज-पाँठ चनरैने आरि अहाँक पारी अछि तँए टिन्तामे छी जे अहाँ केना क२ बाज-पाँठ चनरैने । किएक तँ हमसत देरान्तर संग्राम, वृतान्तर संग्राम कोन-कोन ल केरौ । मरणा-नवकक हेवा सत केरौ । दूदा लोक सत आव उडण्ड होगते गेन । अहिले अहाँ नग एरौ । अणन केना चनरैने ? ”

कनिहग कहनकनि-

“हे देरगण, हम अहाँ सत जकाँ हागन लै बाखरै । दून्नी-पेसकाव लै बाखरै । हमर हेमना तुरते हेते । जे जेहेन काज कवता तिनकव भोग हुनका तुरते भोग पड़तनि । अणुअणन-पडुअ एन जनमक हेवा लै बाखरै । मरणा-नवकक हेवा लै बह देरै । ”

तीनु हगक देरता कनिहगक रिचाव सुनि गम्य भ२ गेना । हेव कनिहग कहनकनि-

“हम प्रणक किछ अणि नए क२ चनरै आ लोक सतकेँ कहरै जे ‘कर्म केनना हनक गच्छा लै कवरै गमन, जेहेन कर्म कवरै तेहेन हन देता भगरान । ”

अ सुनि तीनु हगक देरता अणन-अणन लोक रिदा भ२ गेना । ॥

विदेह वृत्त अंक भाषाशास्त्रक वचनलेखन-

अभिलेख-मैथिली- / मैथिलीकोष-अभिलेख- प्राजेक्टकेँ आगु रँड डि, अणन सुमार आ योगदान अ-मेन द्वारा [ggajendra@videha.com](mailto:ggajendra@videha.com) पब पठाडु ।

**१.भावत आ लपावक मैथिली भाषा-लेखनिक लेखन द्वारा रँगाव मनक गेनी आ २.मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम**

**१.लपाव आ भावतक मैथिली भाषा-लेखनिक लेखन द्वारा रँगाव मनक गेनी**

**१.१. लपावक मैथिली भाषा लेखनिक लेखन द्वारा रँगाव मनक उँचाव आ लेखन गेनी**

(भाषाशास्त्री डा. बागारताव गान्धरक धाकाकेँ पूर्ण रूपसँ सञ्चालन निर्धारित)

**मैथिलीमे उँचाव तथा लेखन**

१. पञ्चमाक्षर आ अक्षराव. पञ्चमाक्षरवास्तुगत ७, ११, १५, १९ एरि म अरैत अछि । संस्कृत भाषाक अक्षराव शिष्टक अक्षरमे जाहि रक्षक अक्षर बँहत अछि ओही रक्षक पञ्चमाक्षर अरैत अछि । जेना-



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

अर्द्ध (क रश्मक बहुरीक कावणे अत्रुमे ङ् आएन अछि । )

पञ्च (च रश्मक बहुरीक कावणे अत्रुमे एङ् आएन अछि । )

खण्ड (छ रश्मक बहुरीक कावणे अत्रुमे ण् आएन अछि । )

सङ्घि (त रश्मक बहुरीक कावणे अत्रुमे ण् आएन अछि । )

खञ्ज (प रश्मक बहुरीक कावणे अत्रुमे म् आएन अछि । )

उपह्रस्व रात मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाक्षरक रैदनामे अधिकशि जगहपव अणुस्वावक प्रयोग देखन जागछ । जेना- अक, पट, खड, सधि, खंत आदि । राकवणरिद पण्डित गोरिन्द नाक कहरी छनि जे करञ्ज, चरञ्ज आ ठरञ्जसँ पूर्ण अणुस्वाव लिखन जाए तथा तरञ्ज आ परञ्जसँ पूर्ण पञ्चमाक्षर ले लिखन जाए । जेना- अक, टटन, अडा, अत्रु तथा कम्पण । हुदा हिन्दीक निकट बहन आधुनिक लेखक एहि रातकेँ नहि मालेत छथि । ओ लोकनि अत्रु आ कम्पणक जगहपव सेहो अत आ कण्ण लिखेत देखन जागत छथि ।

नरीण पछति किछ सुविधाजनक अरुष्ट छैक । किएक तँ एहिमे समय आ स्वाणक रैचत होगत छैक । हुदा कतोक रैव हनुलेखन वा हुदासमे अणुस्वावक छोट सन रीन्दु स्पष्ट नहि भेनासँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि । अणुस्वावक प्रयोगमे उँटाका-दोषक सम्वारणा सेहो ततरै देखन जागत अछि । एतदर्थ कसँ न२ क२ परञ्ज धरि पञ्चमाक्षरक प्रयोग कवरि उँटित अछि । यसँ न२ क२ ङ् धरि अक्षरक सङ्ग अणुस्वावक प्रयोग कवरिसे कतहु कोणा विवाद नहि देखन जागछ ।

२.४ अ थ : ठक उँटाका “व् ह”जकाँ होगत अछि । अतः जतः “व् ह”क उँटाका हो ओतः मात्र ठ लिखन जाए । आष ठाम खाली ठ लिखन जएरौक चाली । जेना-

ठ = ठाकी, ठेकी, ठीठ, ठेँआ, ठसँ, ठेरी, ठाकनि, ठाँठ आदि ।

ठ = गढाँग, रँठरँ, गठरँ, मठरँ, रँठरौ, साँठ, गाठ, बीठ, चाँठ, सीठ, पीठ आदि ।

उपह्रस्व शिष्ट, सबकेँ देखनासँ अ स्पष्ट होगत अछि जे साधाकातया शिष्टक शुक्रमे ठ आ मर्या तथा अत्रुमे ठ अरैत अछि । एह निसग ड आ डक सम्भर्त सेहो नागु होगत अछि ।

२.५ अ रँ : मैथिलीमे “र”क उँटाका रँ कएन जागत अछि, हुदा ओकवा रँ कपमे नहि लिखन जएरौक चाली । जेना- उँटाका : रँण्णथ, रँण्ण, नरँ, देरँता, रँण्ण, रँण्ण, रँण्ण आदि । एहि सबक स्वाणपव फ्रेशि: रँण्णथ, रँण्ण, नर, देरता, रँण्ण, रँण्ण, रँण्ण लिखरौक चाली । सामान्यतया र उँटाकाक लेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४.५ अ ज : कतहु-कतहु “ज”क उँटाका “ज्”जकाँ करैत देखन जागत अछि, हुदा ओकवा ज् नहि लिखरौक चाली । उँटाकासमे यज, जदि, जहुना, ज्ग, जारत, जोगी, जद्, जम आदि कहन जाएरौना शिष्ट, सबकेँ फ्रेशि: यज, यदि, यहुना, यग, यारत, योगी, यद्, यम लिखरौक चाली ।





मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३.ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दुनु लिखन जागत अछि ।

प्राचीन रतनी- कएन, ज्ञाए, हेएत, माए, भाए, गाए आदि ।

नवीन रतनी- कयन, ज्ञाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिष्टक मुकमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एना, एकव, एहन आदि । एहि शिष्ट, सभक स्थापन रहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि करवाक छी । यद्यपि मैथिलीभाषी थारु सहित किछु जातिमे शिष्टक आवस्थामे “ए”केँ य कहि उँटावण कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सम्बन्धमे प्राचीन पद्यतिक अनुसरण करब उँगह्य अछि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुनुक लेखनमे कोना सहजता आ दुकहताक रीत नहि अछि । आ मैथिलीक सरसाधारणक उँटावण-रीती यक अपेक्षा एम् रैसी निकट छैक । थारु क२ कएन, हएँ आदि कतिपय शिष्टकेँ केँन, हेँ आदि कएमे कतहु-कतहु लिखन जाएँ सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रैसी समीप प्रमाणीत करैत अछि ।

३.हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राचीन लेखन-पदसभामे कोना रीतपब रँन दैत कान शिष्टक पाछाँ हि, हू नगाउन जागत छैक । जेना- हुनकहि, अणभहू, ओकवहू, तकोनहि, टोष्टहि, आणहू आदि । रूदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थापन एकाव एँ हूक स्थापन ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हुनके, अणला, तकाले, टोष्टे, आला आदि ।

१.य तथा थ : मैथिली भाषामे अदिकशितः यक उँटावण थ होगत अछि । जेना- यडल (थडल), योडगी (थोडगी), यष्टकोण (थष्टकोण), वृषेण (वृथेण), सन्नाय (सन्नाथ) आदि ।

+.धुनि-जोप : निम्नलिखित अवस्थामे शिष्टसँ धुनि-जोप भ२ जागत अछि:

(क) फिनालयी प्रत्य अग्रमे य रा ए वृत्त भ२ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिले अक उँटावण दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकर आगाँ जोप-सूचक छिन् रा रिक्ती ( / २) नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण रूप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) जेन, उँठए (उँठय) पडतोक ।

अपूर्ण रूप : पठ गेनाह, क जेन, उँठ पडतोक ।

पठ२ गेनाह, क२ जेन, उँठ२ पडतोक ।

(ख) पूर्वकानिक प्रत्य आस (आए) प्रत्यमे य (ए) वृत्त भ२ जागछ, रूदा जोप-सूचक रिक्ती नहि नगाउन जागछ । जेना-

पूर्ण रूप : थाए (य) गेन, पठाए (ए) देरँ, नहाए (य) अनाह ।

अपूर्ण रूप : था गेन, पठा देरँ, नहा अनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्य अक उँटावण फिनापद, सङ्गा, ओ विशेषा तीसुमे वृत्त भ२ जागत अछि । जेना-



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पूर्ण कप : दोसबि मागिनि छनि गेलि ।

अपूर्ण कप : दोसब मागिनि छनि गेल ।

(घ) रतमान प्रदन्तुक अन्तिम त बृष्टु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत अछि, रँजैत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठै अछि, रँजै अछि, गरै अछि ।

(ङ) फ्रियापदक अरसाण गक, उँक, एँक तथा हीकमे बृष्टु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप: छियोक, छियेक, छलीक, छोक, छैक, अरिठैक, होगक ।

अपूर्ण कप : छियौ, छिये, छली, छौ, छै, अरिठै, होग ।

(च) फ्रियापदीय प्रत्यय ह्, ह् तथा हकावक लोप भ२ जागछ । जेना-

पूर्ण कप : छहि, कहनहि, कहनहूँ, गोनह, बहि ।

अपूर्ण कप : छनि, कहनि, कहनौँ, गोनह, बग, बघि, लै ।

९. ध्रुमि आनाश्रुका : कोला-कोला सुब-ध्रुमि अपना जगहसँ हष्टि क२ दोसब ठाम छनि जागत अछि । खाम क२ ज्ञान ग आ उँक सङ्ग्रहमे अ रात नागु होगत अछि । मैथिलीकवा भ२ गेल शिष्टक मया रा अन्तमे जँ दानु ग रा उँ आरैएँ तँ ओकव ध्रुमि आनाश्रुत भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- मैमि (मैगम), पाणि (पागम), दानि (दागम), माष्टि (मागष्टि), काडु (काडुड), मान्नु (माडुम) आदि । द्वाद तसेम शिष्ट, सभमे अ निखम नागु बहि होगत अछि । जेना- बघिकेँ बगम आ सुवाँशुकेँ सुवाँडुम बहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हनन्त ( )क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनन्त ( )क आरंभकता बहि होगत अछि । कावण जे शिष्टक अन्तमे अ उँटावण बहि होगत अछि । द्वाद संस्कृत भाषासँ जहिनक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शिष्ट, सभमे हनन्त प्रयोग कएन जागत अछि । एहि पौथीमे सामान्यतया संपूर्ण शिष्टकेँ मैथिली भाषा सङ्ग्रही निखम अनुसाव हनन्तविनीष बाखन गेल अछि । द्वाद आकवण सङ्ग्रही प्रयोजनक लेन आरंभक स्थानपर कतहू-कतहू हनन्त देन गेल अछि । प्रसूत पौथीमे मैथिली लेखनक प्राप्ति आ नरीन दनु शैलीक सवन आ समीचीन पक्ष सभकेँ समेटि क२ रर्षि-रिगाम कएन गेल अछि । स्थान आ समयमे रँचतक सङ्ग्रहि हन्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सवन होरँरना हिमरँसँ रर्षि-रिगाम गिनाउन गेल अछि । रतमान समयमे मैथिली मातृभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक लेन जेरँ पडि बहन परिश्रेष्ठमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापर ध्यान देन गेल अछि । तखन मैथिली भाषाक मुन विशेषता सभ कृष्टि बहि होगक, तादु दिस लेखक-मन्त सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बाजारताव यादरक कहँ छनि जे सवनताक अनुसन्धानमे एहन अनुशा किम्व ल आरँ देरँक चाली जे भाषाक विशेषता छहिये पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बाजारताव यादरक धारणाकेँ पूर्ण कपसँ सङ्ग न२ निर्धारित)



## १.२. मैथिली अकादमी, षटना द्वारा निर्यातित मैथिली लेखन-गेवी

१. जे शेट्ट, मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आग धरि जाहि रत्ननीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः तहि रत्ननीमे निखन जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह

एखल

ठाग

जकब, तकब

तनिकब

अछि

अग्राह

अखल, अखलि, एखल, अखली

ठिमा, ठिना, ठाग

जेकब, तेकब

तिनकब। (रैकपिक कर्षे ग्राह)

अँड, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कर्षे रैकपिकतया अगनाउने जाय: भ२ गेन, भ३ गेन रा भॣ गेन। जा बहन अछि, जाय बहन अछि, जाँ बहन अछि। कब गेनाह, रा कबय गेनाह रा कबय गेनाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'ष' निखन जाय सकैत अछि यथा कहनषि रा कहनहि।

४. 'अ' तथा 'अँ' ततय निखन जाय जत सप्रुतः 'अग' तथा 'अँ' सदृश उच्चारण गप्रु हो। यथा- देथेत, छलैक, लौखा, छोक गवादि।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शेट्ट, एहि कर्षे प्रयाञ्ज होयत: जैह, सैह, गँह, अँह, लैह तथा दैह।

६. ह्रस्व गकारात शेट्टमे 'ग' के अक्षर कवरँ सामान्यतः अग्राह धिक। यथा- ग्राह देथि आरैह, गानिषि गेलि (मन्त्रय यात्रमे)।

७. स्रुतत्र अक्षर 'ए' रा 'य' प्राचीन मैथिलीक उच्चरण आदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकपिक कर्षे 'ए' रा 'य' निखन जाय। यथा:- कयन रा कयन, अयनाह रा अयनाह, जाय रा जाँ गवादि।

८. उच्चारणमे दु स्रुतत्र रीट जे 'य' ध्वनि स्रुतः आरि जागत अछि तकवा लेखमे स्थान रैकपिक कर्षे देन जाय। यथा- धीखा, अँटैखा, रिखाह, रा धीया, अँटैया, रियाह।

९. सावर्णमिक स्रुतत्र स्रुतत्र स्थान यथार्थतर 'ए' निखन जाय रा सावर्णमिक स्रुतत्र। यथा:- मैएग, कमिएग, किवतमिएग रा मैअँ, कमिअँ, किवतमिअँ।

१०. कावकक रिभक्तिक निम्नलिखित कर्षे ग्राह:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। मे मे अक्षर्याव



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

सर्वाथा लज्जा थिक । 'क' क रैकल्पिक रूप 'केव' बाखन जा सकैत अछि ।

११. पुरिकातिक फियापदक रौद 'कय' रा 'कए' अरय रैकल्पिक रूपेँ नगाउन जा सकैत अछि । यथा:-  
देथि कय रा देथि कए ।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गवादि लिखन जाय ।

१३. अर्छ 'ष' ओ अर्छ 'श' क रँदना अश्रुमाव बहि लिखन जाय, किंतु भाषाक सुरिधार्य अर्छ 'उ', 'ए', तथा 'ण' क रँदना अश्रुमारो लिखन जा सकैत अछि । यथा:- अर्छ, रा अर्क, अश्रन रा अचन, कर्ष रा कर्ठ ।

१४. ठनत छिन निश्चयतः नगाउन जाय, किंतु रिभञ्जिक संग अकारांत प्रयोग कएन जाय । यथा:-  
श्रीमान्, किंतु श्रीमानक ।

१५. सब एकन कावक छिन शिष्टमे सँ क लिखन जाय, हँ क बहि, संशुद्ध रिभञ्जिक हेतु हवाक लिखन जाय, यथा घब पबक ।

१६. अश्रुमाविकरै छन्दरिन्दु द्वारा रञ्ज कएन जाय । परंतु रूद्राक सुरिधार्य हि समाज जष्टन मात्रापर अश्रुमावक प्रयोग छन्दरिन्दुक रँदना कएन जा सकैत अछि । यथा- हि केव रँदना हि ।

१७. पूर्ण रिवास पामीसँ ( । ) सृष्टि कएन जाय ।

१८. समास पद सँ क लिखन जाय, रा हांगफेणसँ जोडि क , हँ क बहि ।

१९. लिख तथा दिख शिष्टमे रीकावी (२) बहि नगाउन जाय ।

२०. अक देरणागवी रूपमे बाखन जाय ।

२१. किछ ध्रुविक सेव नरीन छि रँनरौउव जाय । जा अ बहि रँनर अछि तँरत एहि दुनु ध्रुविक रँदना पुरिरत् अया/ आया/ अय/ आय/ आउ/ अउ लिखन जाय । आकि ए रा अँ सँ रञ्ज कएन जाय ।

ह.।- लोारिन्द मा ११/१३ लीकासु अरुव ११/१३ सुरेन्द्र मा ११/०१/१३

## २. मैथिलीमे भाषा ससादन पाठकेय

### २.१. उँचावा निर्दिने: (रौले कएन कए ज्ञाह):-

दनु न क उँचावामे दौतमे जीह सँत- जेना रौजू नाम , रूदा ण क उँचावामे जीह मूर्धामे सँत (ले सँतैए तँ उँचावा दोय अछि)- जेना रौजू गणेशे । तावरा शैमे जीह तावसँ , शये मूर्धसँ आ दनु मये दौतसँ सँत । निमाँ, सब आ शोषा रौजि कइ देखु । मैथिलीमे श केँ रैदिक संयुत जकाँ अ सेहो उँचवित कएन जागत अछि, जेना बर्या, दोय । य अलको स्थानपर ज जकाँ उँचवित होगत अछि आ ण ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेशे संज्ञोग आ

पडसे उँचवित होगत अछि) । मैथिलीमे र क उँचावा रँ ने क उँचावा स आ य क उँचावा ज सेहो होगत अछि ।



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

ओहिना क्रय ग रौमीकान मैथिलीमे पहिल रौजन जागत अछि काका देरनागवीमे आ मिथिलाक्षरमे क्रय ग अक्षरक पहिल मिथिलो जागत आ रौजलो जखरीक टाली । काका जे हिन्दीमे एकव दोषपूर्ण उँटाका होगत अछि (मिथिल तँ पहिल जागत अछि द्वाद रौजन रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पछतिक दोषक काका ह्य सभ ओकर उँटावण दोषपूर्ण ठगसँ क२ बहन छी ।

अछि- अ ग ड अँठ (उँटाका)

छथि- छ ग थ छैथ (उँटाका)

गहूँटि- ग हूँ ग ट (उँटाका)

आरौ अ आ ग ज ए अँ ओ उ अँ अः म अँ सभ जन मात्रा सेहो अछि, द्वाद अँमे ज अँ ओ उ अँ अः म केँ सहायक कगमे गनत कगमे प्रयुज आ उँटावित कएन जागत अछि । जेना म केँ वी कगमे उँटावित करब । आ देखियौ- अँ जन देखिओ क प्रयोग अछि । द्वाद देखिअँ जन देखियौ अछि । क सँ ह धवि अ समितित तेनासँ क सँ ह रँलेत अछि, द्वाद उँटाका कान हनुप्र यउ शिद्धक अक्षरक उँटाकाक प्रवृत्ति रँठन अछि, द्वाद ह्य जखन मलाजमे ज अँमे रँजेत छी, तखना पुकाका लोककेँ रँजेत स्वरँहि- मलाज२, रासुरमे ओ अ यउ ज = ज रँजे छथि ।

ह्यव ड अछि जू आ ए३ क सहाय द्वाद गनत उँटावण होगत अछि- गा । ओहिना अछि कू आ य क सहाय द्वाद उँटाका होगत अछि ड । ह्यव नू आ व क सहाय अछि श्रै ( जेना श्रैमिक) आ स आ व क सहाय अछि स (जेना मिस) । ए भेन त+व ।

उँटाकाक अँडियो फागन विदेह आर्कागर <http://www.videha.co.in/> गव उँगनअँ अछि । ह्यव केँ / सँ / गव पूरि अक्षरसँ सँठी क२ लिखु द्वाद तँ / क२ सँठी क२ । अँमे सँ ये पहिल सँठी क२ लिखु आ रौदरँना सँठी क२ । अकक रौद ठी लिखु सँठी क२ द्वाद अय ठीग ठी लिखु सँठी क२ जेना

डसँठी द्वाद सभ ठी । ह्यव उअ म सतम विभु- डठम सतम ले । घवरँवमे रँवा द्वाद घवरँवमे रावी प्रयुज कक ।

बहए-

बह द्वाद सकेए (उँटाका सके-ए) ।

द्वाद कखला कान बहए आ बह ये अर्थ तिल्लता सेहो, जेना से कचा जगहमे पाकिंग करबौक अस्त्रस बहँ ओकरा । पडनागव गता नागन जे दुगदुग नामा अँ ड्रागनव कगठँ हसक पाकिंगमे काज करैत बहए ।

डले, डनए ये सेहो अँ तबहक भेन । डनए क उँटावण डन-ए सेहो ।

सयोगल- (उँटाका सयोगल)

केँ/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग पद्यमे ले कक , पद्यमे क२ सके छी । )

क (जेना वायक)

वायक आँ सँग (उँटाका वाय क / वाय क२ सेहो)



## सँ- स२ (उँचाव)

चन्द्रबिन्दु आ अक्षराव- अक्षरावमे कठ धरि प्रयोग होगत अछि रूदा चन्द्रबिन्दुमे ले । चन्द्रबिन्दुमे कलक एकावक सेहो उँचाव होगत अछि- जेना वामसँ- (उँचाव वाम स२) वामकेँ- (उँचाव वाम क२/ वाम के सेहो) ।

केँ जेना वामकेँ भेन हिन्दीक को (वाम को)- वाम को= वामकेँ

क जेना वामक भेन हिन्दीक का ( वाम का) वाम का= वामक

क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव ( जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेन हिन्दीक से (वाम से) वाम से= वामसँ

स२ , त२ , त , केव (गद्यमे) एते टाक शब्द सरहक प्रयोग अराछित ।

के दोसर अर्थे प्रयाग भ२ सकैए- जेना, के कहनक ? रिभक्ति “क”क रँदना एकव प्रयोग अराछित ।

बघि, बहि, ले, बग, बँग, बग, बग ए सतक उँचाव आ लेखन - ले

ओर क रँदनामे ब्र जेना महर्गुर्ण (महओरगुर्ण ले) जतए अर्थ रँदनि जाए ओतहि मात्र तीस अक्षरक सहायक प्रयोग उचित । सप्तति- उँचाव स स ग त (सप्तति ले- कावा सही उँचाव आसानीसँ सञ्चर ले) । रूदा सर्रोतम (सर्रोतम ले) ।

बाह्रिय (बाह्रिय ले)

सकैए/ सकै (अर्थ परिवर्तन)

पोडिये/ पोडि लेन/ पोडय लेव

पोडिये/ पोडय/ (अर्थ परिवर्तन) पोडय/ पोडि

ओ लोकनि ( हठा क२, ओ ये रिक्कावी ले)

ओअ ओहि

ओहिये/

ओहि लेव/ ओही व२

जवरोँ बैसरोँ

गँचअयाँ

देखियोक/ (देखिओक ले- तहिना अ ये द्रव्य आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अराछित)

जकाँ / जेकाँ



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

तँग/ तँ

हेत / हत

नमि/ नहि/ नँग/ नगँ/ ले

सौंस/ सौसे

रँच /

रँचि (सोबोव)

गाए (गाँग नहि), ऋदा गाँगक दूध (गाँगक दूध ले।)

बहलौ/ गहिलतेँ

हमलि/ थलि

सरँ - सभ

सरँरुक - सभरुक

धवि - तक

गग- रौत

रूसरँ - समसरँ

रूसलौ/ समसलौ/ रूसलहँ - समसलहँ

हमवाँ थव - हम सभ

थकि- थ कि

सकैड/ कबैड (गद्यमे प्रयोगक आरंभकता ले)

होअल/ होनि

जाअल (जानि ले, जेना देन जाअल) ऋदा जानि-रूसि (अर्थ परिवर्तन)

गअँ/ जाअँ

थड/ जाड/ थडुँ/ जाडुँ

ये, कै, सँ, गव (शेदिसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (शेदिसँ सँ क२) ऋदा दूँ रा रँसी रिभञ्जि सँग  
बहनागव गहिल रिभञ्जि ठाकैँ सँडुँ। जेना एमे सँ ।

एकठाँ, दूँठाँ (ऋदा क२ ठाँ)

रिंकावीक प्रयोग शेरक अन्तमे, रीटमे अन्तमे कएँ ले। आकावाञ्चु आ अन्तमे अ क रौद रिंकावीक  
प्रयोग ले (जेना दिअ)





मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

. आ/ दिय , आ, आ ले )

अपेन्द्रार्थीयक प्रयोग रिक्कारिक रँदनामे कवरँ अशुचित आ मात्र हर्षक तकनीकी न्यूनताक पविचायक)-  
उना रिक्कारिक संसृत कप २ अरग्रह कहन जागत अछि आ रतनी आ उँचावा दनु ठाय एकव जाग बहेत  
अछि/ बहि सकैत अछि (उँचावणमे जाग बहिते अछि) । रुदा अपेन्द्रार्थीयक सेहो अंग्रेजीमे पनेसिर  
कसमे होगत अछि आ ह्रेँचमे शेट्टेमे जतए एकव प्रयोग होगत अछि जेना *raison d'etre*  
एतए सेहो एकव उँचावण बेजोस डेठव होगत अछि, माल अपेन्द्रार्थीयक अरकामे ले दैत अछि रवण  
जोडेते अछि, से एकव प्रयोग रिक्कारिक रँदना देनाग तकनीकी कर्पे सेहो अशुचित) ।

अगमे, एहिमे/ एँमे

जगमे, जाहिमे

एथन/ अथन/ अगथन

कँ (कै नहि) मे (असुनाव बहित)

भ२

मे

द२

तँ (त२, त ले)

सँ (स२ स ले)

गाछ तब

गाछ वग

साँस खन

जो (जो go, करे जो do)

ते/तअ जेना- ते दुखारे/ तगमे/ तगले

जे/जअ जेना- जे कावण/ जगसँ/ जगले

ए/अअ जेना- ए कावा/ एँसँ/ अगले/ रुदा एकव एकटी थाम प्रयोग- नानति कतेक दिनसँ कहैत  
बहेत अग

ले/वअ जेना लेसँ/ नगले/ ले दुखारे

नहँ/ लो

गेलो/ लेलो/ लवँ/ गेनहँ/ जेनहँ/ जेन



मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

**अअ/ जाहि/ जे**

**जहिग/ जाहिग/ अगग/ जेगग**

**एहि/ अहि**

**अग (बालक अतमे बाल) / अ**

**अगड/ अडि अँड**

**तग/ तहि/ ते/ तहि**

**उहि/ उग**

**ओहि/ ओ**

**ओरि/ ओरी/ ओर**

**उरही/ उरहि**

**ते/ तँ/ तँ**

**अएर/ अएर**

**नग/ ने**

**उग/ उ**

**नहि/ ने/ नग**

**गग/ गे**

**उहि/ उरहि ...**

**सम** शेरदक संग अखन कोना रिभक्ति जूठे ते तखन समे जना समेगव गत्यादि । असगवमे **दद** आ रिभक्ति जूठेले ददे जना ददेसँ, ददेमे गत्यादि ।

**अअ/ जाहि/**

**जे**

**जहिग/ जाहिग/ अगग/ जेगग**

**एहि/ अहि/ अग/ अ**

**अगड/ अडि अँड**

**तग/ तहि/ ते/ तहि**

**उहि/ उग**



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

स्रीथि/ स्रीथ

जरीरि/ जरीरी

जरीर

भले/ भलेही

भवहि

ते/ तँग/ तँ

जापरै/ जपरै

नग/ न

ढग/ ढ

नहि/ नै/ नग

गग/

लौ

ठगि/ ठगहि

टुकन अछि/ लोव गछि

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठिक्रम

गीटाँक सुटीमे देन रिक्स्पमेसँ लैंग्गज एडीटव द्वावा कोल कप टुनन जेरौक चाली:

लौलेड कएन कप ग्राह:

१. होयरीना/ होरीयरीना/ होमयरीना/ हेरीरैना, हेमरीना/ होयरीक/होरियरीना /होयरीक

२. आ/आ२

आ

३. क लेल/क२ लेल/कय लेल/कय लेल/न/न२/नय/नय

४. भ' गेल/भ२ गेल/भय गेल/भय

गेल

५. कव' गेनाह/कव२

गेनाह/कव२ गेनाह/कवय गेनाह

६.



**विथ/दिथ विय,दिय,विथ,दिय/**

१. कव' रैना/कव२ रैना/ कवय रैना कवैरैना/क'व' रैना /

**कवैरैनी**

५. रैना रना (शुकय), रानी (सूनी) ७

**थीङ्ग थीग्न**

५०. थीयः थीयल

५५. दुःथ दुथ ५

२. चलि गेल चव लाव/टेल गेल

५३. देवथिह देवकिह, देवथिन

५४.

**देथवहि देथवनि/ देथवैह**

५३. डथिह/ डवहि डथिन/ डलेन/ डवनि

५७. चवैत/दैत चवति/दैति

५१. एथला

**थथला**

५५.

**रैठनि रैठन रैठहि**

५७. ७/७२(सरैनाया) ७

२०

**७ (सैयैजक) ७/७२**

२५. थानि/थानि थानि/थानि

२२.

**जे जे/जे२ २३ ना-शुकव ना-शुकव**

२४. केवहि/केवनि/कवनिहि

२७. तथनत/ तथन त



२७. जा

बहवा/जाय बहवा/जाय बहव

२१. निकमय/निकमय

वागव/वगव रैलवाय/रैलवाय वागव/वगव निकव/रैलवे वागव

२४. उतय/ जतय जत/ उत/ जतय/ उतय

२९.

की खुबव जे कि खुबव जे

३०. जे जे/जे२

३९. कुदि / यादि(मोन पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/

यादि (मोन)

३२. ओलो/ ओलो

३३.

हंसय/ हंसय हंस२

३४. लो आकि दस/लो किरा दस/ लो रा दस

३३. सान्-सन्व सान्-सन्व

३७. डह/ सात ड/डः/सात

३१.

की की/ की२ (दीधीकावसुषे २ रजित)

३४. जरारै जरारै

३६. कवयताह/ कवयताह कवयताह

४०. दवान दिशि दवान दिशि/दवान दिय

४९

. लोवाह गयवाह/गयवाह

४२. किड आब किड उव/ किड आब

४३. जाग डव/ जागत डव जाति डव/जेत डव

४४. गहुँटा/ जेठ जागत डव/ जेठ जाग डव गहुँटा/ जेठ जागत डव



४३.

**ऊरौन (शुन) / ऊरौन(खौन)**

४७. वन/ वन क/ कन/ वन कन / वन कन/ वन कन

४१. व/वन कन/

**कन**

४५. एखन / एखन / अखन / अखन

४६.

**अखिले अखिले**

३०. गहिव गहिव

३५.

**धव गौव कनग धव गौव कनग/कनग**

३२. जेकाँ जेकाँ

**ऊकाँ**

३३. तहिन तहिन

३४. एकव अकव

३३. रँहिन रँहिन

३७. रँहिन रँहिन

३१. रँहिन-रँहिन

**रँहिन-रँहिन**

३५. नहि/ ले

३६. कवरौ / कवरौय/ कवरौय

७०. तँ/ त २ तय/तय

७५. तेनाकी मे जेठ-बाय/जेठ, जेठ-बाय/बाय

७२. गिजतीमे दु भाग/बाय/बाय

७३. अ पोथी दु भागक/ भाग/ भाय/ जेठ। यारत जारत

७४. माय मे / माय दूद मायक मयत



मानुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

७३. **देहि/ दण दणि/ दएहि/ दएहि दहि/ दैहि**

७७. **द/ द२/ द३**

७१. **उ (संयोजक) उ२ (संरनाग)**

७५. **तका कए तकाय तकए**

७६. **पौले (on foot) पएले कएक/ कैक**

१०.

**तहुमे/ तहमे**

११.

**रुवक**

१२.

**रुखा कय कए / क२**

१३. **रुखाय/रुखाय**

१४. **रुखा**

१३.

**दिका दिका**

१७.

**ततहि**

११. **गवरुंउमहि/ गवरुंमनि/**

**गवरुंमहि/ गवरुंमनि**

१५. **रुव रुव**

१६.

**रुह रुह(रुह)**

५०. **रुह रुह**

५१

**रुह रुह रुह**

५२. **रुह रुह रुह**





+३. उगिहाव बुगिहाव

+४. सुगव

/ सुगवका सुगव

+३. सगलक सगलक +३.

भुषि

+१. कवगयो/७ कवेयो ल देवक / कवेयो-कवगयो

+१. सुगवि

सुगवि

+२. सगड १-सगडी

सगड १-सगडी

२०. गगल-गगल गोल-गोल

२१. खेवगरीक

२२. खेवगरीक

२३. वगा

२४. लो- लो लोख

२५. सुगव सुगव

२६.

सुगव (सुगव अर्थमे)

२७. योह यगह / गगल/ गोल/ सगल

२८. ताविव

२९. अगलाय- अगलाग/ अगलाग/ अगलाग

३०. गिल- गिल

३१.

विगु विग

३२. जग जग

३३.



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

### झांघ (in different sense)-last word of sentence

१०४. छत गब थांघि झांघ

१०३.

ल

१०६. खेवांघ (play) खेवांघ

१०१. शिकांघत- शिकायत

१०४.

ठग- ठग

१०९

. गठ- गठ

११०. कनिए/ कनिये कनिये

१११. बाकस- बाकसे

११२. लोय/ लोय लोय

११३. अडवदा-

उबदा

११४. बुंमेवहि (different meaning- got understand)

११३. बुंमएवहि/बुंमेवनि/ बुंमयवहि (understood himself)

११६. चलि- चव/ चमि लव

१११. खधांघ- खथाय

११४.

योम पांघवबिह/ योम पांघवबिनि/ योम पांघवबिह

११९. केक- कएक- कएक

१२०.

वग वग

१२१. जवनांघ

१२२. जवनांघ जवनांघ- जवनांघ/



## जबेनाथ

१२३. होगत

१२४.

गबरोवहि/ गबरोवनि गबरोवहि/ गबरोवनि

१२५.

टिखेत- (to test) टिखगत

१२६. कबखयो (willing to do) करेयो

१२७. जेकवा- जकवा

१२८. तकवा- तेकवा

१२९.

बिदेसब झामे/ बिदेसबे झामे

१३०. कबरौजहुँ/ कबरौजहुँ/ कबरौजहुँ कबरौवौ

१३१.

हारिक (उठाव लखवक)

१३२. ओज्ज रज्ज आबसोच/ अबसोस कागत/ कागच/ कागज

१३३. आवे भाग/ आव-भागे

१३४. पिटा / पिटाया/ पिटाए

१३५. नए/ ल

१३६. रैठा नए

(ल) पिटा जाय

१३७. तखन ल (नए) कहेत अछि। कहे/ सुले देखे छव दूदा कहेत-कहेत/ सुलेत-सुलेत/ देखेत-देखेत

१३८.

कतेक लोटे/ कतक लोटे

१३९. कयाग-धयाग/ कयाग- धयाग

१४०

. वग वग



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१४१. खेलवांग (for playing)

१४२.

**डबिहा डबिहा**

१४३.

**लोगत लोग**

१४४. का कियो / केउ

१४५.

**कमे (hair)**

१४६.

**कस (court-case)**

१४७

**कलनांग/ कलनांग/ कलनांग**

१४८. कलनांग

१४९. ककरी कर्मी

१५०. चवटा चटा

१५१. कर्म कवम

१५२. डुराँरौं/ डुराँरौं/ डुराँरौं डुराँरौं/ डुराँरौं

१५३. एखुलका/

**एखुलका**

१५४. कष/ कष (राकाक अंतिम गेह)- कष

१५५. कषक/

**कषक**

१५६. कषी कषी

१५७

**कषी कषी**

१५८. कषी कषी कषी/कषी

१५९. कषी-कषी



१७०.

**तेना ल घेववहि/ तेना ल घेववनि**

१७१. नदी/ ले

१७२.

**छवा छवा**

१७३. कतहु/ कते कही

१७४. उमरिगव-उमरगव उमरगव

१७५. भरिगव

१७६. धोन/धोथव धोथव

१७७. गग/गग

१७८.

**क क**

१७९. दवरैजा/ दवरैजा

१८०. गी

१८१.

**धवि तक**

१८२.

**धुवि लोष्ट**

१८३. बौबरैक

१८४. रैड

१८५. तौ/ तू

१८६. तौहि( गद्यमे ग्राह)

१८७. तौली / तौहि

१८८.

**कवरौगव कवरौगवे**

१८९. एकेटी



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१+०. कवितमि / कवतमि

१+१.

**गुँटि/ गुँट**

१+२. बाखवहि बखवहि/ बखवनि

१+३.

**वगवहि वगवनि वागवहि**

१+४.

**बुनि (उँचावा बुजा)**

१+५. अछि (उँचावण अगछ)

१+६. एवमि लोवमि

१+७. रिउल/ रिउेल/

**रिउेल**

१+८. कवरौवहि/ कवरौवनि

**करेवहि/ करेवनि**

१+९. कवएवहि/ कवएवनि

१२०.

**आकि/ कि**

१२१. गुँटि/

**गुँट**

१२२. रौती जवाग/ जवाए जवा (आगि जगा)

१२३.

**मे मे**

१२४.

**हौ मे हौ (लौमे हौ रिउकिउमे लौ कए)**

१२५. खेव खेव

१२६. खजव(spacious) खेव



मनुषीभिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१७१. होयतहि/ होयतहि/ होयतहि/ होयतहि/ होयतहि

१७४. हाथ मटियाएर/ हाथ मटियाएर/ हाथ मटियाएर

१७७. फेका फेका

२००. देखाए देखा

२०५. देखाए

२०२. सतुवि सतुव

२०३.

**सालेर सालेर**

२०४. गोलैह/ गोलैह/ गोलैह

२०३. होयक/ होयक

२०७. केला/ केला/ केला/ केला/ केला

२०१. किड न किड/

**किड ल किड**

२०४. घुमेनह/ घुमेनह/ घुमेनह

२०७. एकाक/ एकाक

२५०. अः/ अः

२५५. नय/

**नय (अर्थ-परिवर्तन) २५२ कनक/ कनक**

२५३. सरैक/ सतक

२५४. गिलाः/ गिला

२५३. कः/ क

२५७. जाः/

**जा**

२५१. आः/ आ

२५४. भः/ भ' (१ फाँटक कमीक घातक)

२५७. नियम/ नियम





२२०

**लेबहेथवा/ लेबहेयव**

२२१. पहिव अफव ठा/ रीदका/ रीचक ठ

२२२. तहि/तहि/ तयि/ तै

२२३. कहि/ कही

२२४. तँ/ तँ

**तै / तँ**

२२५. नँग/ नगँ/ नयि/ नहि/लै

२२६. है/ ह्य / एवीहै/

२२७. डयि/ डै/ डैक / डग

२२८. दृष्टि/ दृष्टियै

२२९. थी (come)/ थीं (conjunct i on)

२३०.

**थी (conjunct i on)/ थीं (come)**

२३१. कला/ कोला/ कोना/ केना

२३२. गोलैह-गोलहि-गोलनि

२३३. लेरीक- लोएरीक

२३४. केनौ- कएनौ- कएनहूँ/ केनौ

२३५. किड न किड- किड ल किड

२३६. केहेन- केहन

२३७. थीं (come)- थीं (conjunct i on-and)/ थीं । आरै- आरै / आरैह- आरैह

२३८. ह्यत- ह्यत

२३९. घुमेनहूँ- घुमेनहूँ- घुमेनहूँ

२४०. एनक- अएनाक

२४१. लोनि- लोनि/ लोहि/

२४२. उ- बाग उ आगक रीच (conjunct i on), उं कहनक (he said)/ उं



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२४३. की ह्य/ कोसी अथवा ह्य/ की हे । की हज

२४४. दृष्टिअँ/ दृष्टियैँ

२४५.

**. गोमिवा/ गोमिव**

२४६. तैँ / तँ/ तमि/ तहि

२४७. जैँ

**/ जाँ/ जाँ**

२४८. सभ/ सरै

२४९. सभक/ सरैलक

२५०. कहि/ कही

२५१. कला/ कोला/ कोलहँ/

२५२. शबकती भय लोव/ भय लोव/ भय लोव

२५३. कोना/ कोना/ कना/ कना

२५४. अः/ अह

२५५. जलै/ जलै

२५६. लोवनि/

**लोवाह (अर्थ परिवर्तन)**

२५७. केमहि/ केमहि/ केवनि/

२५८. मया/ मया/ मयाह (अर्थ परिवर्तन)

२५९. कनीक/ कलक/ कनी-मनी

२६०. गठवहि गठवनि/ गठवजस/ गपठवहि/ गठवोवनि/

२६१. निथय/ निथय

२६२. हेबईअव/ हेबईअव

**२६३. गहिव अफव बहल ठ/ रीटमे बहल ठ**

२६४. आकावाप्तये रिक्वावीक प्रयोग उचित ले/ अपोद्धातनीक प्रयोग हास्यक तकनीकी युगतक परिचायक  
ओकव रैदना अरग्रह (रिक्वावी) क प्रयोग उचित

२६५. केव (पद्यमे ज्ञाह) / -क/ क२/ के



मनुषीभि संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२७७. छेहि- छहि

२७१. बलौष/ बलौये

२७५. लोएत/ लएत

२७६. जएत/ जएत

२१०. खएत/ खएत/ खओत

२१९

. खएत/ खएत/ खेत

२१२. पिखएरौक/ पिखरौक/ पियरौक

२१३. गुक/ गुकल

२१४. गुकले/ गुकए

२१७. खएतल/ खओतल/ एतल/ एतल

२१७. जाहि/ जाग/ जख/ जे

२११. जागत/ जेतए/ जगतए

२१५. खएव/ खएव

२१६. कैक/ कएक

२१०. खएव/ खएव/ खएव

२१९. जख/ जखए/ जए (नामति जाए नगनीह । )

२१२. बुकएव/ बुकएव

२१३. कर्खएव/ कर्खएव

२१४. तहि/ ते/ तख

२१७. गायरौ/ गायरौ/ गयरौ

२१७. सके/ सकए/ सकय

२११. सेवा/सवा/ सकए (भात सवा गेव)

२११. कहेत बखी/देखेत बखी/ कहेत छलौ/ कहे छलौ- खलिना छलौ/ गठेत

(गठे-गठेत अर्थ कखला काव परिवर्तित) - खी बूसे/ बूसेत (बूसे/ बूसे छी कूदा बूसेत-बूसेत)/ सके/ सके । करे/ करे । दे/ देत । छे/ छे । बूसे/ बूसेक । बखरौ/ बखरौक । बिग/ बिग । बातिक/ बातिक बूसे अ बूसेत केव अग-अग अगल अयोग समीप अछि । बूसेत-बूसेत खी बूसे/ बूसे छी । लमछ बूसे छी ।



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२१७. दुखाव/ द्वाव

२१८. भेष्ट/ भेष्ट/ भेष्ट

२१९.

ख/ ख/ खुना (भव ख/ भव ख)

२२०. तक/ धवि

२२१. ग/ लो (meaning different - जनरों ग)

२२२. स/ स (दूदा द, न)

२२३. उ/ उ (तीन अक्षरक मेल रँदना प्रकृति एक आ एकरी दोसबक उगयोग) आदिक रँदना ह्र आदि। मह उ/ मह/ कर्ता/ कर्ता आदिमे त सङ्गक कोना आरंभकता मैथिलीमे ले अछि। **रउर**

२२४. रैमी/ रैमी

२२५. रानी/ रानी रँवा/ रना (वहरँवा)

२२६

रावी/ (रँदनेवावी)

२२७. राती/ राती

२२८. अस्तुवर्द्धिय/ अस्तुवर्द्धिय

२२९. सम/ सम

२३०. समभवका/ समभवका

२३१. वाली/ वाली (

भेष्ट/ भेष्ट)

२३२. वाग/ वाग

२३३. हरी/ हरी

२३४. वाचक/ वाचक

२३५. आ (come)/ आ (and)

२३६. गशाता/ गशाता

२३७. २ केव रारहाव शिष्टक अस्तुमे मात्र, यथासंभव रीटमे ले।

२३८. कहत/ कहत

२३९.



मनुषीभि संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

**बह्व (डव)/ बहे (डवे) (meaning different)**

३१. तागति/ ताकति

३२. खाग/ खवारि

३३. रोगि/ रोगि/ रोगि

३४. जार्ति/ जार्ति

३५. कागज/ कागज/ कागज

३६. गिरे (meaning different - swallow)/ गिर (थस)

३७. बह्दिय/ बह्दिय

**DATE-LIST (year - 2013-14)**

**(१४२५ फसवी साव)**

**Marriage Days:**

Nov.2013- 18, 20, 24, 25, 28, 29

Dec.2013- 1, 4, 6, 8, 12, 13

January 2014- 19, 20, 22, 23, 24, 26, 31.

Feb.2014- 3, 5, 6, 9, 10, 17, 19, 24, 26, 27.

March 2014- 2, 3, 5, 7, 9.

April 2014- 16, 17, 18, 20, 21, 23, 24.

May 2014- 1, 2, 8, 9, 11, 12, 18, 19, 21, 25, 26, 28, 29, 30.

June 2014- 4, 5, 8, 9, 13, 18, 22, 25.

July 2014- 2, 3, 4, 6, 7.

**Upanayana Days:**

February 2014- 2, 4, 9, 10.

March 2014- 3, 5, 11, 12.

April 2014- 4, 9, 10.



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

June 2014- 2, 8, 9.

***Dviraagaman Din:***

November 2013- 18, 21, 22.

December 2013- 4, 6, 8, 9, 12, 13.

February 2014- 16, 17, 19, 20.

March 2014- 2, 3, 5, 9, 10, 12.

April 2014- 16, 17, 18, 20.

May 2014- 1, 2, 9, 11, 12.

***Mundan Din:***

November 2013- 20, 22.

December 2013- 9, 12, 13.

January 2014- 16, 17.

February 2014- 6, 10, 19, 20.

March 2014- 5, 12.

April 2014- 16.

May 2014- 12, 30.

June 2014- 2, 9, 30.

**FESTIVALS OF MTHILA (2013-14)**

Mauna Panchami -27 July

Madhushravani - 9 August

Nag Panchami - 11 August

Raksha Bandhan- 21 Aug



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Kr i shnast ami - 28 August  
Kushi Amavasya / Somvar i Vr at - 5 Sept ember  
Har t al i ka Teej - 8 Sept ember  
Chaut hChandr a-8 Sept ember  
Vi shwak arma Pooj a- 17 Sept ember  
Anant Catur dashi - 18 Sep  
Pi t ri Paksha begi ns - 20 Sep  
Ji moot avahan Vr at a/ Ji t i a-27 Sep  
Mat ri Navami -28 Sep  
Kal ashst hapan- 5 Oct ober  
Bel naut i - 10 Oct ober  
Pat r i ka R avesh- 11 Oct ober  
Mahast ami - 12 Oct ober  
Maha Navami - 13 Oct ober  
Vi j aya Dashami - 14 Oct ober  
Koj agar a- 18 Oct  
Dhant er as - 1 November  
Di yabat i , shyama pooj a-3 November  
Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-4 November  
Bhr at ri dwi t i ya/ Chi t r agupt a Pooj a- 5 November  
Chhat hi -8 November  
Sama Pooj aar ambh- 9 November  
Devot t han Ekadashi - 13 November



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

r avi vr at ar ambh - 17 November

Navanna par van - 20 November

Kar t i k Poor ni ma - Sama Vi sar j an - 2 December

Vi vaha Panchmi - 7 December

Makar a / Teel a Sankranti - 14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 29 Januar y

Basant Panchami / Sar aswati Pooj a - 4 Febr uar y

Achl a Sapt mi - 6 Febr uar y

Mahashi var at ri - 27 Febr uar y

Hol i kadahan - Fagua - 16 Mar ch

Hol i - 17 Mar ch

Sapt ador a - 17 Mar ch

Var uni Trayodashi - 28 Mar ch

Jur i shi t al - 15 April

Ram Navami - 8 April

Akshaya Tritiya - 2 May

Janaki Navami - 8 May

Ravi Br at Ant - 11 May

Vat Savi tri - bar asait - 28 May

Ganga Dashhar a - 8 June

Har i vasar Vr at a - 9 Jul y

Shr ee Gur u Poor ni ma - 12 Jul





मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

VI DEHA ARCHIVE

१.पत्रिकाक सबठो पुवाष अंक ब्रैल-रिदेह ज, तिवहूत आ देरणागरी कसमे Vi deha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

रिदेह जअंक ३.०पत्रिकाक पहिल -

रिदेह जमा मँ आगाँक अंक ३.०पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-i/>

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-ii/>

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Maithili Books Download

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/>

३.डियो संकलनआँ मैथिली. Maithili Audio Downloads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audio/>

४.मैथिली वीडियोक संकलन Maithili Videos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-videos/>

५. आधुनिक चित्रकला आ चित्र /चिथिना चित्रकला. Maithila Painting/ Modern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-paintings-photos/>

**रिदेहक एहि सब सल्लयोगी विकसव सेहो एक लेब जाई ।**

७.रिदेह मैथिली ब्लिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१.रिदेह मैथिली जानवृत एग्रीगेटर :

<http://videha-aggregator.blogspot.com/>

+.रिदेह मैथिली साहित अग्रेजीमे अनुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

९.रिदेहक पुरि-कप "भावसरिक गाछ" :



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

<http://gajendrathakur.blogspot.com/>

१०. रिदेह ङडिअ :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. रिदेह फांगल :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. रिदेह: सदेह : पलिन तिवहूता (मिथिलासुवर) जानवृत (रैलंग)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. रिदेह:रैल: मैथिली रैलमे: पलिन रैव रिदेह द्वावा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VI DEHA I ST MAITHILI FORTNIGHTLY EJOURNAL ARCHIVE

<http://videha-archive.blogspot.com/>

१५. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका मैथिली पोथीक आर्कांगल

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१६. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका ऑडियो आर्कांगल

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१७. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका रीडियो आर्कांगल

<http://videha-video.blogspot.com/>

१८. रिदेह प्रथम मैथिली पाष्किक ङ पत्रिका मिथिला चित्रकला, आधुनिक कला आ चित्रकला

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१९. मैथिल आर मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानवृत)

<http://maithilaurmaithila.blogspot.com/>

२०. प्रकाशिस श्रुति.

<http://www.shrutipublication.com/>

२१. <http://groups.google.com/group/videha>



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२२. <http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२३. गजेन्द्र ठाकुर गडेकर

<http://gajendrathakur123.blogspot.com>


२४. लषा लुठका

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२५. बिदेह रेडियोकारिता आदिक पहिल पोडकास्ट सांठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२६.  [Videha Radio](http://VidehaRadio.com)

२७.  [Join official Videha facebook group](http://JoinofficialVidehafacebookgroup.com)

२८. बिदेह मैथिली नाँठे उमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२९. समदिया

<http://esamad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>

३१. अचरिखार आखर

<http://anchinharakharakolkata.blogspot.com/>

३२. मैथिली हाङ्कु

<http://maithili-haikeu.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. विहनि कथा

<http://vihani-katha.blogspot.in/>



मनुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

३३. मैथिली कविता

<http://maithili-kavitablogspot.in/>

३७. मैथिली कथा

<http://maithili-kathablogspot.in/>

३१. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochnablogspot.in/>

**महत्वपूर्ण सूचना:** The Maithili pdf books are AVAILABLE FOR free PDF  
DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>



मनूषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



बिदेह:सदरह:९: २: ३: ४:३:७:१:४:२९० "बिदेह"क छिष्ट संस्करण: बिदेह-७-पत्रिका (<http://www.videha.co.in/>) क छन वचना समिति।

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

Details for purchase available at publisher's (print-version) site <http://www.shruti-publication.com> or you may write to [shruti\\_publication@shruti-publication.com](mailto:shruti_publication@shruti-publication.com)

बिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन



मनुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VI DEHA

(c) २००४-१४. सरपिकार बखकारिण आ जतए बखकर नाम बहि अछि ततए संपादकारिण । रिदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका । SSN 2229-547X VI DEHA संपादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-संपादक: उमेश मंडल । सहायक संपादक: गिर कमार साँ, बाबू रिवाम साँ, आ कुराजि मेलार कमार कर्ण । भाषा-संपादन: गजेन्द्र कमार साँ आ पञ्जीकर विद्यानन्द साँ । कव-संपादन: जति साँ टोडरी आ बमि बेथी मिश्र । संपादन-शोध-अनुवाद: स. जया रमि आ स. बाजुर कमार रमि । संपादन-नाटक-बंगम-चवचि- लेख ठाकुर । संपादन-सुचना-संपर्क-समाद- पुनम मंडल आ धिबिका साँ । संपादन-अनुवाद विभाग- विनीत उषा ।

बचनाकार अण मूलिक आ अत्रकाशित बचना (जकर मूलिकताक संपूर्ण उतबदासिन्न बखक गणक मया छहि) ggajendra@vi.deha.com केँ मेल अटैचमेण्टक कगमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छथि । बचनाक संग बचनाकार अण सक्रिय परिचय आ अण कएन कएन गेल क्लेपेँ पठैतान, मे आशा करैत छी । बचनाक अंतमे पठागण बहय, जे ई बचना मूलिक अछि, आ पहिने प्रकाशक हेतु रिदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकालेँ देन जा बहन अछि । मेल प्राप्त होयबौराक बाद यथार्थतर शीघ्र ( सात दिनक भीतर) एकब प्रकाशक अंकक सूचना देन जायत । 'रिदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका अछि आ एमे मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ संपरित बचना प्रकाशित कएन जागत अछि । एहि ई पत्रिकालेँ त्रीमति कम्पनी ठाकुर द्वारा मासक ०५ आ १३ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएन जागत अछि ।

(c) २००४-१४ सरपिकार स्वबकित । रिदेहमे प्रकाशित सभठौरा बचना आ आर्कागरक सरपिकार बचनाकार आ संप्रककर्ताक नगमे छहि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाश किरा आर्कागरक उपयोगक अत्रिकार किराक हेतु ggajendra@vi.deha.com पब संपर्क कर । एहि सागठकेँ प्रीति मा ठाकुर, मनुषीका टोडरी आ बमि प्रिया द्वारा डिजागण कएन गेल । ३. जूनाई २००४ केँ

<http://gajendrat.hakur.bl.ogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html> "भानसबिक गाछ"- मैथिली ज्ञानरतुसँ प्राबन्ध गठबलेपब मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा रिदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचन अछि, जे <http://www.videha.co.in/> पब ई प्रकाशित होगत अछि । आर "भानसबिक गाछ" ज्ञानरतु रिदेह ई-पत्रिकालेँ प्रथम संग मैथिली भाषाक ज्ञानरतुक एग्रीगेटबक कगमे प्रयाग २२ बहन अछि । रिदेह ई-पत्रिका । SSN 2229-547X VI DEHA



सिंहबहु

